वर्ष 45 अंक 11 नवम्बर 2018 ₹15/-

हँसती दुनिया

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाये।

हँसती दुनिया

• वर्ष 45 • अंक 11 • नवम्बर 2018 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक — **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक — **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
10. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. अजब-गजब
47. आपके पत्र मिले
49. रंग भरो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

6. मुश्किल सरल बनाएंगे, एकता का रंग
: हर्षिता देवड़ा

17. दीप जले
: गफूर 'स्नेही'

17. दीपक
: दिनेश दर्पण

21. लो फिर से आ गई दीवाली, ऐसे दीपावली मनाएं
: डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

27. दीपों का त्योहार
: रंजना राजेश चौधरी

27. जंगल में दीवाली
: महेन्द्र कुमार वर्मा

31. नाम कमाओ, बच्चों की दुनिया
: कमलसिंह चौहान

41. रानी लक्ष्मीबाई
: डॉ. परशुराम शुक्ल

कहानियां

8. शिवाजी का साहस
: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

18. गलती का प्रायश्चित
: नेहा गुप्ता

20. भविष्यवाणी का कमाल
: जयेन्द्र

25. शक्ति की शैतानी
: डॉ. सेवा नन्दवाल

30. रूप का घमण्ड
: विभा वर्मा

39. किये की सजा
: विपिन कुमार

विशेष/लेख

16. गोरिल्ला
: डॉ. विनोद गुप्ता

22. तितली मछली
: डॉ. परशुराम शुक्ल

28. विचित्र छिपकलियां
: दीपांशु जैन

32. गुणों से भरपूर शहद
: राजकुमार जैन

42. विश्व की प्रसिद्ध गुफाएं
: किरण बाला

महत्व प्रकाश का

प्रायः हमने यह सुन रखा है कि अन्धकार से प्रकाश की ओर चलना हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए हम अनेक बार प्रार्थना भी करते हैं – 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् हे प्रभु! हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। जिसको भी इस मार्ग पर चलना है उसे इस बात का बोध तो होगा ही कि मैं अन्धकार में जी रहा हूँ। अन्यथा वह ऐसी प्रार्थना करेगा ही नहीं। जिसकी आँखें हैं, जो देख सकता है वह भी उतनी ही तन्मयता से चाहता है कि उसके जीवन में प्रकाश हो, और जिसकी आँखें नहीं हैं अर्थात् जो दृष्टिहीन है वह भी चाहता है कि वह प्रकाश में विचरण करे।

जिसकी आँखों में रोशनी ही नहीं है, उसने तो कभी प्रकाश को जाना ही नहीं। जिसकी आँखों में रोशनी है वह दृष्टिहीन को दीन (हीन) भाव से देखता है। और यदा-कदा उसका उपहास भी करता है परन्तु दृष्टिहीन व्यक्ति के लिए प्रकाश एक आकर्षण भी होता है और वह उसका महत्व भी समझता है।

एक प्रसंग के अनुसार एक दृष्टिहीन व्यक्ति हमेशा अपने पास रात को एक जलती हुई लालटेन रखता था। वह जहाँ भी जाता अपने साथ लालटेन अवश्य रखता था। एक बार वह दृष्टिहीन व्यक्ति रात को कहीं से जलती हुई लालटेन के साथ अपने घर वापस आ रहा था। कुछ नौजवान और बच्चे उसके रास्ते से गुजर रहे थे और उन्होंने दृष्टिहीन व्यक्ति का मजाक उड़ाया। एक ने उसको रोक कर प्रश्न किया- अरे भाई, तुम तो अन्धे हो, तुम्हें तो कुछ दिखायी नहीं देता। फिर तुमने इस लालटेन को व्यर्थ में क्यों उठाया हुआ है?

उस दृष्टिहीन व्यक्ति ने बड़ी सादगी से उत्तर दिया, "क्योंकि मैं संयोगवश देख नहीं सकता, मैं तो जन्म से ही दृष्टिहीन हूँ परन्तु मैं इस रोशनी को इसलिए हमेशा साथ रखता हूँ कि आप जैसे लोग जिनकी आँखें हैं वे देख सकें। आपको दृष्टिहीन व्यक्ति दिखाई दे या न दे परन्तु ये ज्योति अवश्य ही दिखाई देगी और मैं भी किसी तरह की संम्भावित टक्कर से बच जाऊंगा।"

प्यारे साथियों! हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि हमारी किसी से भी किसी भी कारण वश कोई टक्कर या प्रतिरोध न हो अर्थात हमारा अहम् हमारे वश में रहना चाहिए और स्वाभिमान को विवेक से जाग्रत कर जीवन जीने से हमारे जीवन को ज्योतिर्मय कर देगा। फिर हमारी प्रार्थना अवश्य ही साकार रूप धारण कर लेगी जब हमारा कर्म, हमारा आचरण, हमारी प्रार्थना के अनुरूप होगा। अगर एक दृष्टिहीन व्यक्ति प्रकाश को साथ में रखकर अनेकों कठिनाईयों से बच सकता है तो जिनके पास आँखें हैं वे अगर अपनी आँखों को खोलकर चलेंगें और दूसरे के नज़रिये को समझेंगें तो जीवन में दिव्य प्रकाश की अनुभूति का बोध होगा।

इसी प्रकार अगर हमारे मन में परमात्मा का प्रकाश होगा, मन की ज्योति जल उठेगी तो उसका प्रभाव स्वतः ही अन्य लोगों को दिखाई देगा और इस ज्योति से अन्य लाखों दीपकों को उजियारा मिल सकेगा। ज्ञान की ज्योति की इस मशाल को लगातार प्रज्जवलित रखने के लिए सन्त निरंकारी मिशन का 71वां निरंकारी सन्त समागम 25-26-27 नवम्बर, 2018 को निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा (पानीपत, हरियाणा) में सम्पन्न होगा।

– विमलेश आहूजा

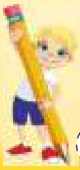

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 175

तेरी कुदरत दा हे दाता अन्त किसे नहीं पाया ए।
गीता ग्रंथ ते वेदां ने वी तेरा ही जस गाया ए।
लासानी लाफ़ानी दाते कुल सिफ़तां तों बाहिरा ए।
दुनियां दे लई गुप्त एं भावें भगतां दे लई ज़ाहिरा ए।
हुकम तेरे नाल इस माया ने जीआं नूं भरमाया ए।
हुसन जवानी दा दे चकमां चक्करां दे विच पाया ए।
इक तिल दा वी अकलां वाले कर सक्के विस्तार नहीं।
तेरी महिमा तूहियों जाणे तेरा पारावार नहीं।
मनमुक्खां नूं सार न तेरी भगतां ने पहचान लियै।
कहे अवतार गुरु तों जिस ने रब्बा तेरा ज्ञान लियै।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा का ज्ञान सद्‌गुरु से प्राप्त होता है और इस ज्ञान के द्वारा ही परमात्मा की पहचान होती है। अपनी बुद्धि, विद्वता, चालाकी, चतुराई से परमात्मा को तिलभर भी जान पाना संभव नहीं होता। परमात्मा की बनाई हुई इस कुदरत (प्रकृति) का विस्तार ही इतना अधिक है कि आज तक कोई इसका ओर-छोर नहीं पा सका है। वेदो-ग्रन्थों, गीता आदि ने युगों-युगों से इस प्रभु का ही यश गाया है। इसकी महिमा से सारे वेद-ग्रंथ भरे पड़े हैं। यह प्रभु अद्वितीय है, इस जैसा कोई और नहीं है। यह लाफानी है, इसका कभी नाश नहीं होता; यह कल था, आज है और आगे भी रहेगा। इसकी महिमा गा पाना आसान नहीं है, यह यशकीर्ति से ऊपर है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जो अपनी बुद्धि-विवेक से इसे समझने का प्रयास करते हैं। दुनिया के उन लोगों के लिए यह गुप्त है लेकिन अपने भक्तों के लिए यह सदैव जाहिर है, प्रकट है। यह दृष्टिमान माया इस परमपिता-परमात्मा की ही रचना है और इस मालिक की आज्ञा से ही इसने सभी जीवों को भ्रमित किया हुआ है। इस बहुरंगी माया के कितने ही रूप हैं। शारीरिक सुन्दरता और जवानी की ताकत, उमंग, उल्लास के प्रभाव दिखाकर इस माया ने सम्पूर्ण जगत के लोगों को धोखे में रखा है, अपने चक्करों में डाल रखा है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि बड़े-बड़े अक्ल वाले, ऊँची सोच-समझ रखने वाले इसका तिलभर भी विस्तार नहीं कर सके, यह जिस रूप में युगों से है, आज भी उसी रूप में है। इसमें कण मात्र भी फर्क करने में कोई भी अक्लमंद, विद्वान आज तक सफल नहीं हुआ है। भक्त तो यही कहता है कि हे प्रभु! तेरा कोई पारावार नहीं है, आदि-अंत नहीं है। तेरी महिमा तू ही जाने और कोई जान नहीं सकता। मनमुख जो अपने मन की विचारधारा पर चलते हैं वे तेरा सार नहीं जान पाते, केवल भक्त ही हैं जिन्होंने तेरी कृपा से तुझे पहचाना है। यह पहचान तेरे ज्ञान द्वारा संभव है, जिसे कृपा करके तू अपने भक्तों को प्रदान करता है।

दो बाल कविताएं : हर्षिता देवड़ा

मुश्किल सरल बनाएंगे

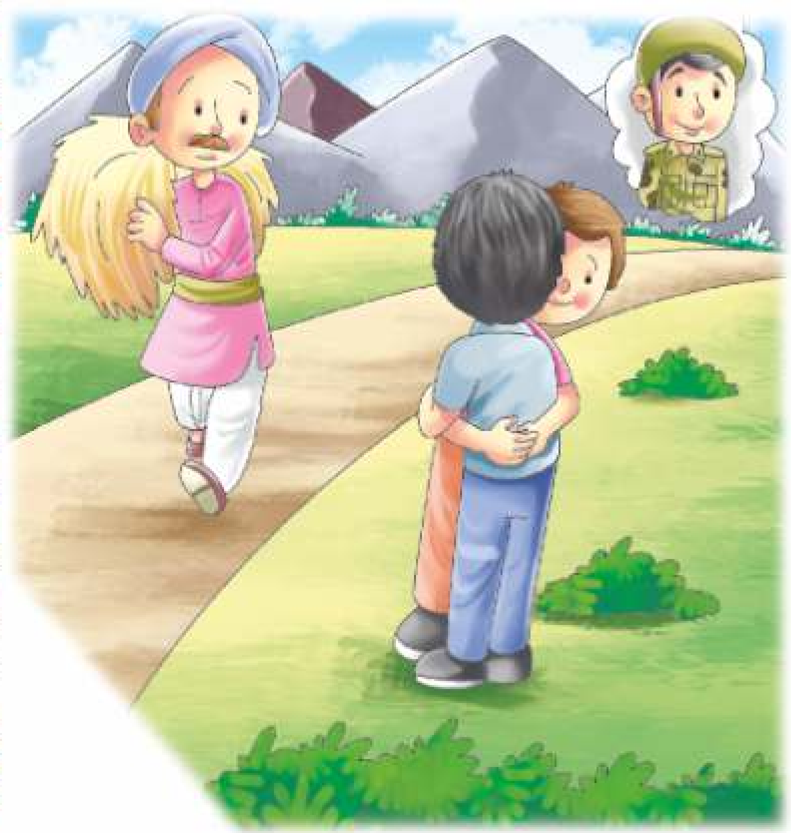

आगे कदम बढ़ाएंगे,
काम देश के आएंगे।
वैर-भाव को दूर भगाकर,
सब पर प्यार लुटाएंगे।।

श्रम से न घबराएंगे,
मुश्किल सरल बनाएंगे।
घर-घर सुख पहुँचाएंगे,
गीत प्यार के गाएंगे।।

एकता का रंग

रहे चैन से मिलजुलकर सब,
छोड़ो वह आतंक।
राग-द्वेष को भूल,
एकता का घोलो रंग।।

एक बने हम नेक बने हम,
कितनी अच्छी बात।
दिन होंगे फिर चांदी जैसे,
सोने जैसी रात।।

संकलनकर्ता : रामअवध राम (गुरैनी, गाजीपुर)

अनमोल वचन

★ यदि प्राप्त करना चाहते हो तो पहले अर्पित करो। – सुभाषचन्द्र बोस

★ भले काम का स्वभाव ऐसा धन है जिसे न चोर चुरा सकता है न शत्रु छीन सकता है। – स्वामी विवेकानंद

★ मस्तिष्क के लिए शिक्षा की उतनी ही अवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की। – एडिसन

★ लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा उत्पन्न नहीं हो सकती। – अरस्तु

★ प्रेम के साथ खिलाई गयी वस्तु चाहे मामूली हो, प्रशंसा किए बिना न रहो। – संत काशीराम

★ सहानुभूति मानव के हृदय की पवित्रतम भावना है। – बर्क

★ मुट्‌ठीभर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं।

★ अपने अहंकार पर विजय पाना ही प्रभु-सेवा है।

★ रक्षा का पहला साधन है– ईश्वर में सच्ची व सरल श्रद्धा। दूसरा है– पड़ोसियों की सद्‌भावना। – महात्मा गाँधी

★ घृणा राजाओं की सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्य का चिह्न जबकि प्रेम देवताओं का स्वभाव। – भर्तृहरि

★ विनम्रता से श्रेष्ठ कोई अस्त्र नहीं। – सूक्ति

★ अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन न करना देशद्रोह होता है और अपने को धोखा देना भी। – अमरवाणी

★ द्वेष, द्वेषी व्यक्ति को ही खा जाता है। – तुलसीदास

★ कुछ नहीं करोगे तो कुछ नहीं बनोगे। – होव

★ प्रशंसा के भूखे यह साबित कर देते हैं कि वे योग्यता में कंगाल हैं। – प्लुटार्क

★ बिना निराश हुए पराजय को सह लेना, पृथ्वी पर साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है। – इंगरसोल

★ प्रतिशोध दूरदर्शी नहीं होता। – नेपोलियन

★ दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा दूसरों से तुम अपने लिए चाहते हो। – जीसस

★ मानव का सच्चा जीवन साथी विद्या ही है जिससे वह विद्वान कहलाता है। – दयानंद सरस्वती

★ जलता हुआ एक दीपक हजार दीपकों को जला सकता है। इससे दीपक की आयु कम नहीं होती। इसी तरह खुशी बांटने से कभी कम नहीं होती। – गौतम बुद्ध

★ जिस घर में छोटे-बड़े सब मिलकर रहते हैं, वह घर अपने बल पर सदा सुरक्षित रहता है। - अथर्ववेद

★ मनुष्य अपनी परिस्थितियों का निर्माता आप है। जो जैसा सोचता है और करता है, वह वैसा ही बन जाता है। – ऋग्वेद

★ यह जरूरी नहीं कि हर अच्छी चीज अच्छी जगह ही मिले।

★ कभी भी अपनी कमजोरियों को दूसरे के सामने नहीं बताना चाहिए। ये अपने लिए ही अहितकर हो सकता है। – अज्ञात

कथा-प्रसंग : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

शिवाजी का साहस

बालक शिवाजी पर समर्थ गुरु रामदास जी की दृष्टि पड़ी। शिवाजी का शरीर तो दुर्बल था पर अदम्य साहस से भरा हुआ मनोबल, जो प्रत्येक कठिन काम को सरल बनाने की क्षमता रखता था। समर्थ गुरु के हृदय में यह इच्छा सदैव रहती थी कि शिवाजी के आत्मबल और साहस को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए समर्पित भाव से कार्य सम्पन्न कराने हेतु तैयार कर अपने प्रयोजन में लगाया जा सकता है। उन्होंने शिवाजी से सम्पर्क बढ़ाया और वह समर्थ के सत्संग में सहर्ष भाग लेने लगे। प्रभु-कृपा से घनिष्ठता बढ़ती गई। समर्थ रामदास के मन को लगा कि शिवाजी मेरे कार्य का है।

फिर भी शिवाजी का परीक्षण करने का उन्होंने निश्चय किया। कुपात्र के हाथ में जो भी वस्तु लगे वह उसका दुरुपयोग करता है। इसलिए अपनी दैवी शक्ति प्रदान करने से पहले उसे भली प्रकार क्यों न परख लिया जाए। ऐसी प्रबल योजना को वे साकार रूप देना चाहते थे।

एक दिन उन्होंने अपनी आँख के दर्द का बहाना बनाया और शिवाजी से कहा— मुझे बहुत कष्ट है, यदि शीघ्र ही इसका उपचार न हुआ तो मेरी आँखों की रोशनी चली जायेगी।

शिवाजी ने कहा— गुरुदेव! मैं इस कष्ट के उपचार का जानकार नहीं हूँ। आप ही कोई उपाय बताएं। मैं उसे पूरा करने का हरसम्भव प्रयास करूंगा।

समर्थ रामदास बोले— यदि सिंहनी का दूध आँख में डाला जाये तो आँखें अच्छी हो सकती हैं। सामने वाली गुफा में एक सिंहनी ने बच्चों को जन्म दिया है। यदि कोई वहाँ पर

जाये और सिंहनी का दूध लाए तो काम हो सकता है। उनका इशारा शिवाजी की ओर था।

तत्क्षण शिवाजी तैयार हो गए। वे लोटा लेकर उसी गुफा की ओर निर्भयता से आगे बढ़ने लगे। मार्ग में वे यही सोचते जा रहे थे कि यदि सिंहनी ने आक्रमण करके मार डाला तो भी कोई बात नहीं, परमार्थ के निमित्त जीवन जाने से बड़ा सदुपयोग उसका क्या हो सकता है?

सिंहनी बच्चों को दुग्धपान करा रही थी। शिवाजी ने उससे मन ही मन प्रार्थना की कि वह इतनी कृपा कर दे कि गुरुजी की आँखों की रोशनी की रक्षा हो सके। दूध का पात्र आगे बढ़ाकर उन्होंने सिंहनी का दूध निकालना शुरू कर दिया। सिंहनी शान्त भाव से पड़ी रही। शिवाजी ने दूध लोटे में ले लिया। सिंहनी के बच्चों ने भी कोई हानि नहीं पहुँचाई।

शिवाजी ने दूध लाकर गुरुजी को सौंपा। उन्होंने उस दूध की बूंदों को आँख में डालते हुए कहा– "मेरी आँख ठीक हो गई, दर्द चला गया।" सिंहनी भी समर्थ गुरु रामदास जी ने अपनी सिद्धि द्वारा उत्पन्न की थी। दूध लाना तो शिवाजी के साहस और परमार्थ की परीक्षा मात्र थी, शिवाजी जिसमें उत्तीर्ण हो गए।

समर्थ गुरु रामदास जी ने कभी वार न चूकने वाली, कभी पराजय न देने वाली भवानी तलवार शिवाजी को भेंट में दी और देश की स्वतंत्रता के लिए संगठन बनाने व संघर्ष करने का शुभाशीष दिया। इतने महत्वपूर्ण कार्य हेतु जिस श्रेणी की चयन प्रक्रिया की आवश्यकता थी, वह पूरी हो गई थी।

गुरु की कठिन परीक्षा पर खरे उतरे शिवाजी का मन प्रसन्नता से भरा हुआ था।

क्रू एस्केप सिस्टम का सफल परीक्षण

बेंगलुरु (भाषा)। इसरो ने संकट की स्थिति में अंतरिक्षयात्रियों की जान बचाने में मददगार क्रू एस्केप सिस्टम की उड़ान का सफल परीक्षण किया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कहा है कि क्रू एस्केप सिस्टम की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता को परखने के लिए सिलसिलेवार परीक्षण में यह पहला अभियान था। मिशन के विफल होने की स्थिति में इस सिस्टम का इस्तेमाल अंतरिक्ष यान से अंतरिक्ष यात्रियों को सुरक्षित निकालने में हो सकेगा।

इसरो ने बताया है कि पहले 'पैड अबार्ट सिस्टम' ने परीक्षण में किसी भी आपात स्थिति के समय क्रू मॉड्यूल की सुरक्षित वापसी का कामयाब प्रदर्शन किया। पांच घंटे की उल्टी गिनती के बाद छद्म क्रू मॉड्यूल के साथ क्रू एस्केप सिस्टम मॉड्यूल को श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश) स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से सुबह सात बजे छोड़ा गया। यह परीक्षण करीब 259 सेकेंड चला। लॉन्चिंग के बाद टेस्टिंग मॉड्यूल कुछ देर तक हवा में रहा और बंगाल की खाड़ी में गिरने के बाद पानी में 2.9 किमी. की दूरी तय करके श्रीहरिकोटा पहुँच गया।

जल से हाइड्रोजन ईंधन बनाने वाली सामग्री विकसित

वॉशिंगटन। (भाषा)। वैज्ञानिकों ने एक ऐसी किफायती सामग्री विकसित की है जो जल को तोड़कर हाइड्रोजन ईंधन बनाने में मदद कर सकती है। जल को इसके अवयवों– हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करने के लिए अधिकतर प्रणलियों में दो उत्प्रेरकों की जरूरत होती है। एक हाइड्रोजन को पृथक करने के वास्ते प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए और दूसरा ऑक्सीजन के उत्पादन के लिए।

अमेरिका स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन और कैलिफोर्निया इंस्टि्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि इसमें पानी से हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए आवश्यक ऊर्जा की मात्रा को नाटकीय रूप से कम करने की क्षमता होती है। कम ऊर्जा का मतलब यह हुआ कि हाइड्रोजन उत्पादन कम लागत पर किया जा सकता है। यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन के प्रोफेसर झिफेंग रेन ने कहा, 'इससे हम वाणिज्यीकरण के करीब आए हैं।' हाइड्रोजन को कई औद्योगिक उपयोगों में स्वच्छ ऊर्जा के वांछनीय स्रोत के रूप में जाना जाता है। नेचर कम्युनिकेशंस पत्रिका में प्रकाशित अनुसंधान रिपोर्ट में रेन ने कहा कि क्योंकि इसे सम्पीड़ित किया जा सकता है इसलिए ऊर्जा के कुछ अन्य स्वरूपों की तुलना में इसका अधिक आसानी से भंडारण किया जा सकता है। हालांकि बड़ी मात्रा में गैस उत्पादन के लिए प्रायोगिक, किफायती और पर्यावरण अनुकूल तरीका खोजना खासकर पानी को इसके अवयवों में तोड़ना एक चुनौती रहा है। यूनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन के सहायक प्रोफेसर शुओ चेन ने कहा, 'हमारे द्वारा विकसित सामग्री धरती पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध तत्वों पर आधारित है और प्लैटिनम समूह की सामग्रियों के सापेक्ष तुलनात्मक प्रदर्शन करती है।'

(साभार : रा. स.) – संकलन : बबलू कुमार

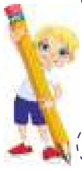

सद्‌गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की पावन छत्रछाया एवं निरंकारी यूथ फोरम के तत्वावधान में ग्राउंड नं 8 दिल्ली में आयोजित निरंकारी यूथ सिम्पोजियम में आध्यात्मिक जाग्रति का संदेश दिया गया। इस भव्य आयोजन की कुछ झलकियां प्रस्तुत हैं—

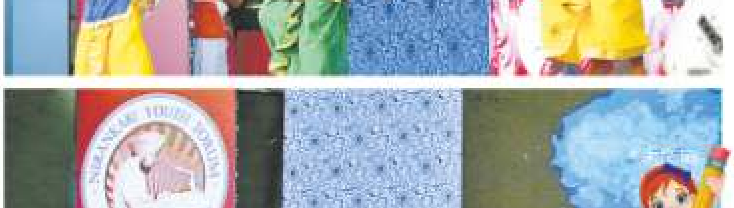

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

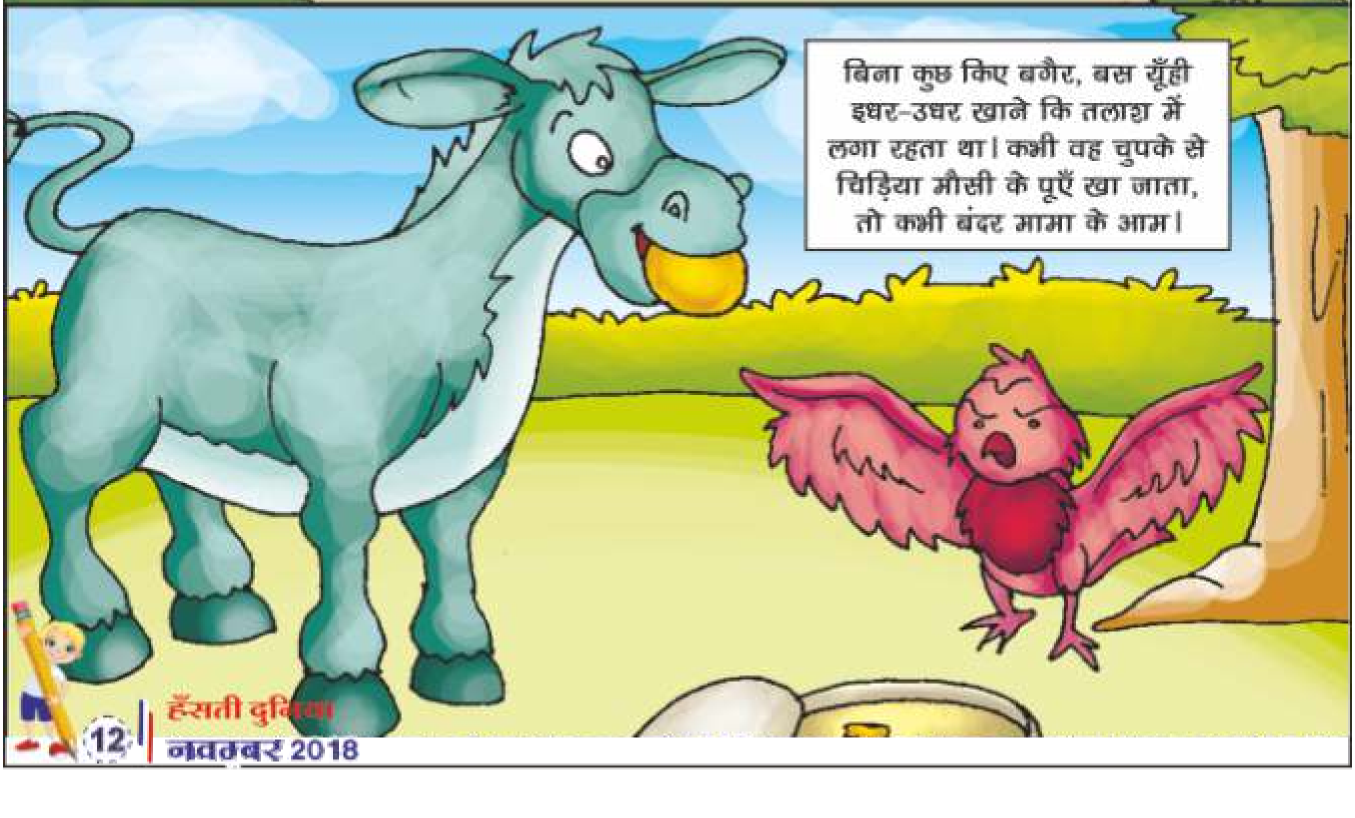

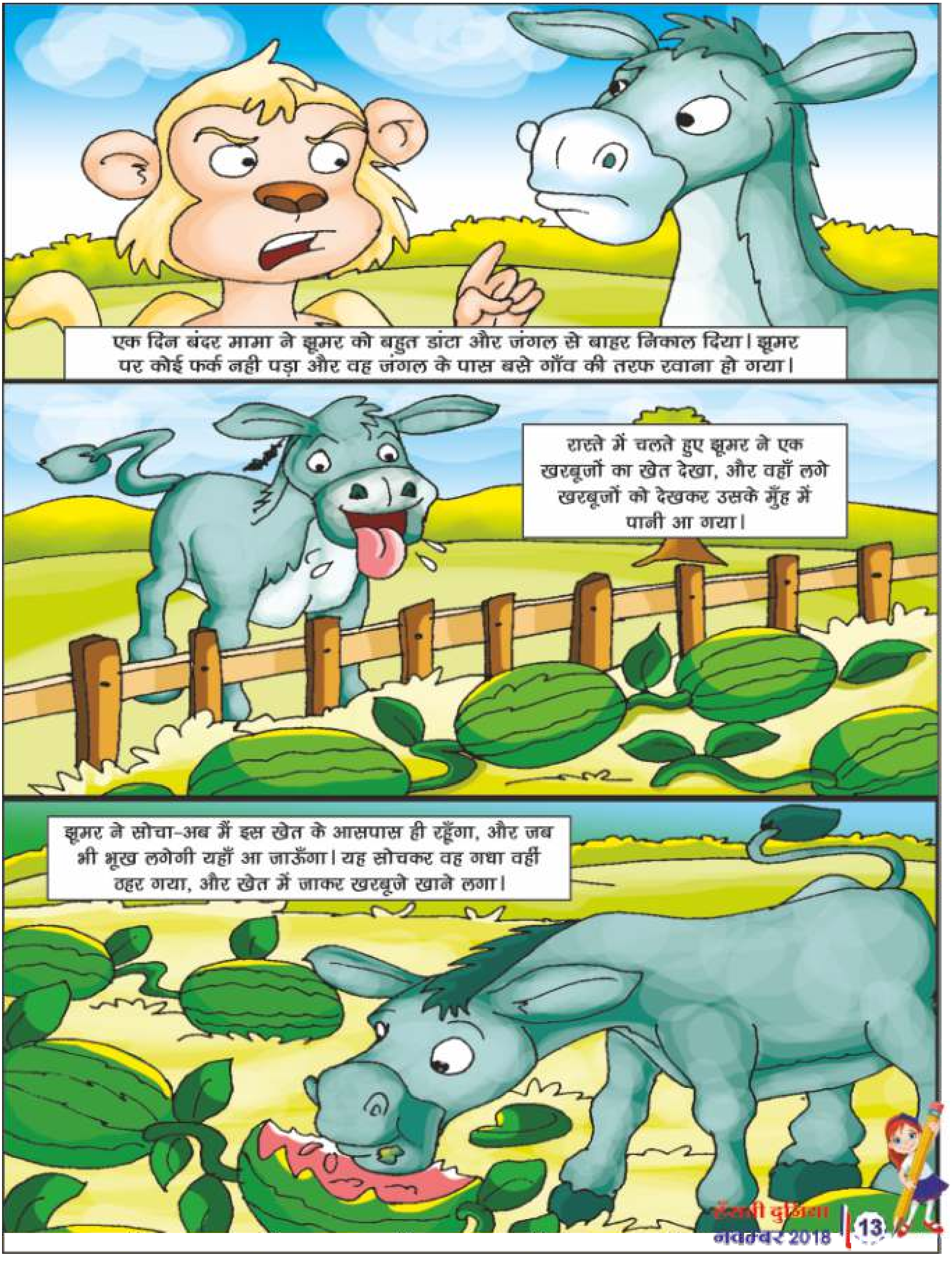
एक दिन बंदर मामा ने झूमर को बहुत डांटा और जंगल से बाहर निकाल दिया। झूमर पर कोई फर्क नही पड़ा और वह जंगल के पास बसे गाँव की तरफ रवाना हो गया।
रास्ते में चलते हुए झूमर ने एक खरबूजों का खेत देखा, और वहाँ लगे खरबूजों को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया।
झूमर ने सोचा-अब मैं इस खेत के आसपास ही रहूँगा, और जब भी भूख लगेगी यहाँ आ जाऊँगा। यह सोचकर वह गधा वहीं ठहर गया, और खेत में जाकर खरबूजे खाने लगा।

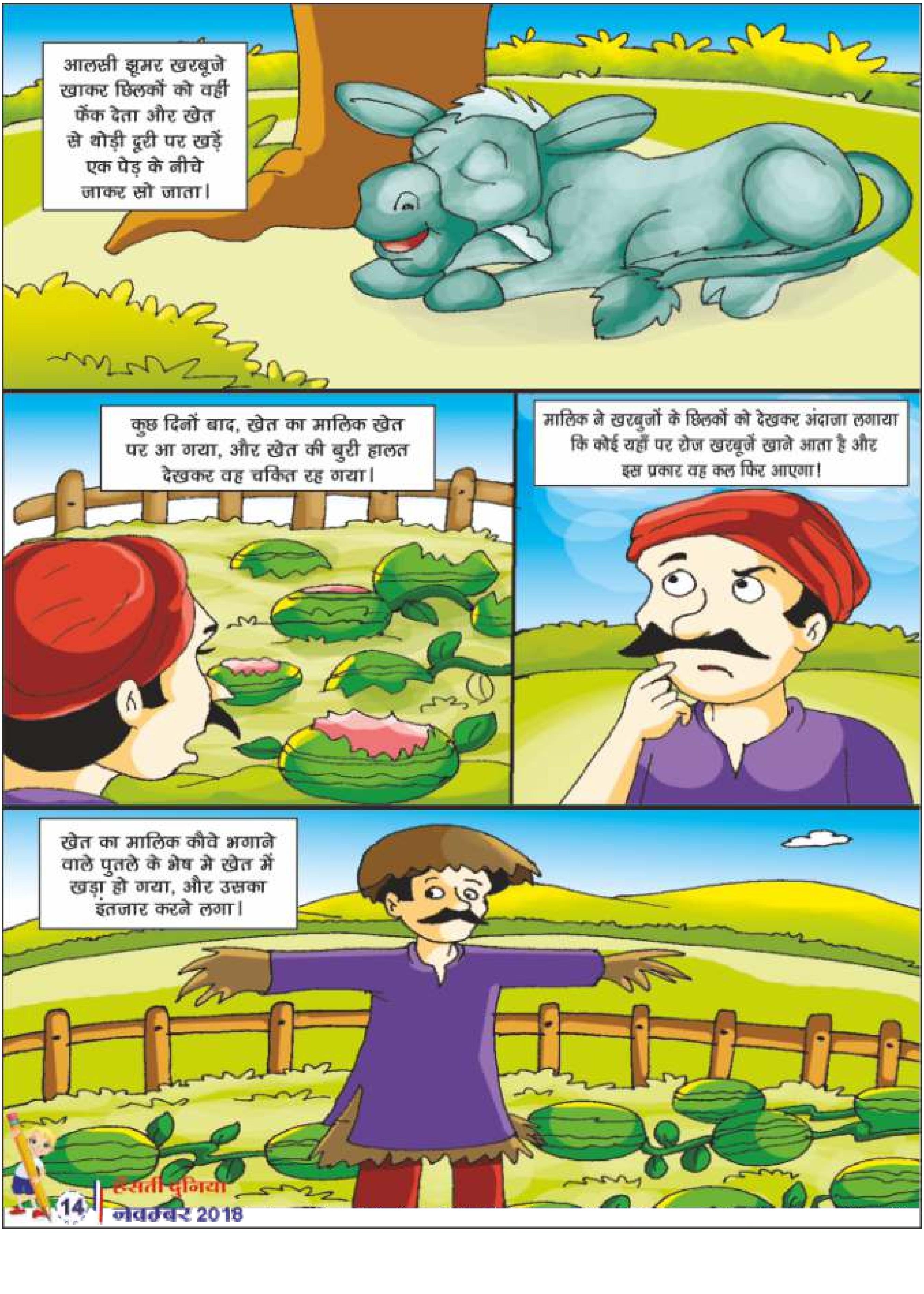
आलसी झूमर खरबूजे खाकर छिलकों को वहीं फेंक देता और खेत से थोड़ी दूरी पर खड़े एक पेड़ के नीचे जाकर सो जाता।
कुछ दिनों बाद, खेत का मालिक खेत पर आ गया, और खेत की बुरी हालत देखकर वह चकित रह गया।
मालिक ने खरबुजों के छिलकों को देखकर अंदाजा लगाया कि कोई यहाँ पर रोज खरबूजें खाने आता है और इस प्रकार वह कल फिर आएगा!
खेत का मालिक कौवे भगाने वाले पुतले के भेष मे खेत में खड़ा हो गया, और उसका इंतजार करने लगा।

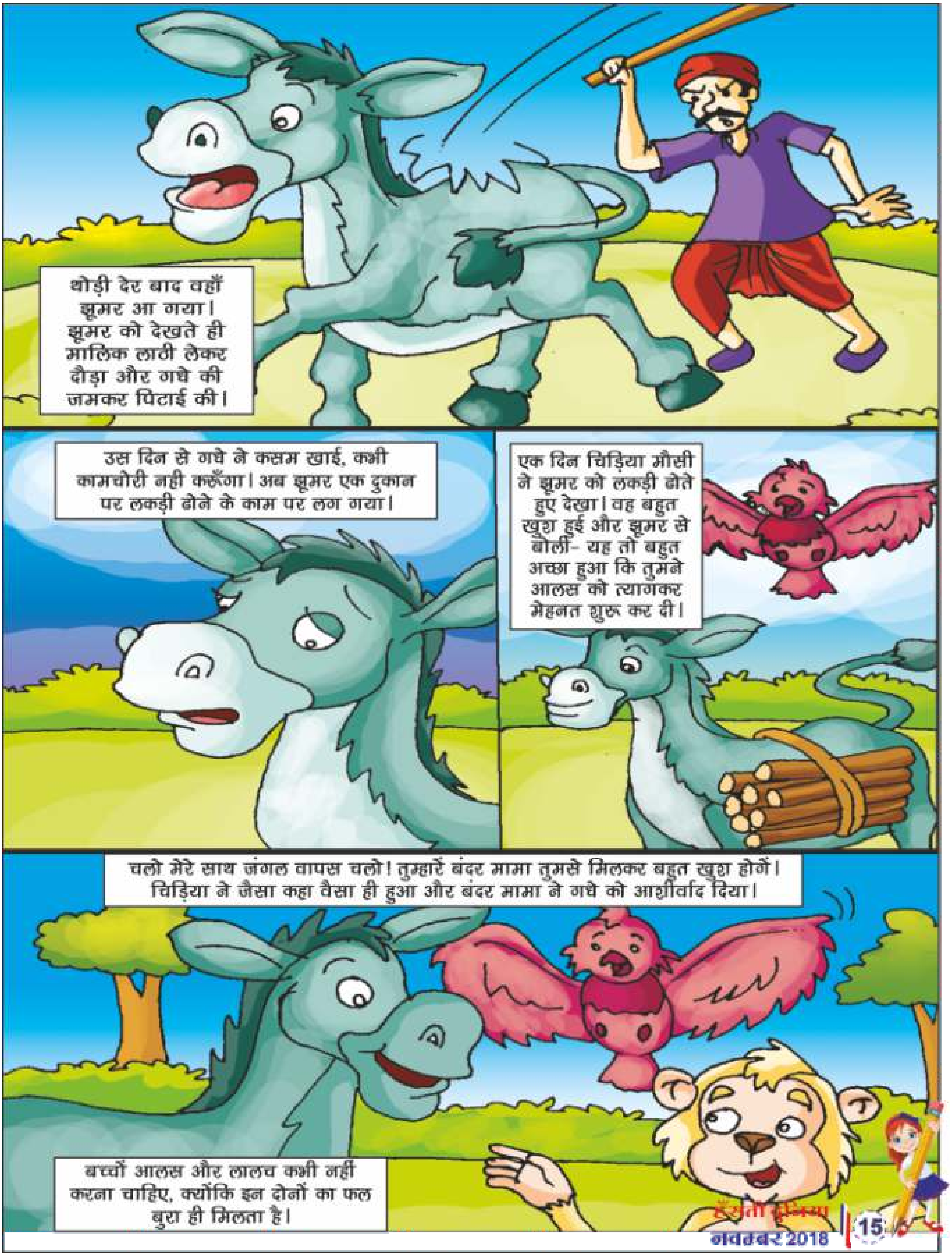
थोड़ी देर बाद वहाँ झूमर आ गया। झूमर को देखते ही मालिक लाठी लेकर दौड़ा और गधे की जमकर पिटाई की।
उस दिन से गधे ने कसम खाई, कभी कामचोरी नही करूँगा। अब झूमर एक दुकान पर लकड़ी ढोने के काम पर लग गया।
एक दिन चिड़िया मौसी ने झूमर को लकड़ी ढोते हुए देखा। वह बहुत खुश हुई और झूमर से बोली- यह तो बहुत अच्छा हुआ कि तुमने आलस को त्यागकर मेहनत शुरू कर दी।
चलो मेरे साथ जंगल वापस चलो! तुम्हारें बंदर मामा तुमसे मिलकर बहुत खुश होगें। चिड़िया ने जैसा कहा वैसा ही हुआ और बंदर मामा ने गधे को आशीर्वाद दिया।
बच्चों आलस और लालच कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि इन दोनों का फल बुरा ही मिलता है।

आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

गोरिल्ला

कुछ जानवरों की प्रजातियां मानव से मिलती-जुलती हैं। इन्हीं में से एक है गोरिल्ला। बिना पूंछ वाले ये बंदर एन्थ्रोपोइड वर्ग में आते हैं। एशिया और अफ्रीका के घने जंगलों में ये पाए जाते हैं।

कद में गोरिल्ला आदमी के बराबर होता है किन्तु वजन में ये इंसान से भारी होते हैं। काली त्वचा वाले ये गोरिल्ला सामाजिक होते हैं तथा झुंडों में रहते हैं। शैशव अवस्था में बच्चे अपने माँ-बाप के पास ही रहते हैं। माता-पिता इन्हें पेड़ों पर सुलाते हैं और स्वयं जमीन पर। शांत स्वभाव वाला गोरिल्ला छेड़ने पर उग्र हो जाता है और मुँह से ढोल की भांति आवाज निकालने लगता है।

गोरिल्ला भी दुर्लभ जीव की श्रेणी में आते हैं। धीरे-धीरे इनकी संख्या कम हो रही है। इन्हें सुरक्षित और संरक्षित रखने के हर संभव उपाय किए जा रहे हैं।

गोरिल्ला जब तक छोटे होते हैं, सर्वभक्षी होते हैं यानी कीड़े-मकोड़े, अंडे, पत्तियां आदि खाते हैं। लेकिन बड़े होने पर वे पूर्णत: शाकाहारी हो जाते हैं।

पूर्वी जायरे व दक्षिण पश्चिम युगांडा के निम्न भूमि जंगलों में पूर्वी निम्न भूमि नर गोरिल्ला की खड़े हुए लम्बाई 5 फीट 9 इंच और वजन 165 किलोग्राम होता है। पश्चिम रवांडा दक्षिण-पश्चिम युगांडा और पूर्वी जायरे के ज्वालामुखी पर्वत शृंखला के पर्वतीय गोरिल्ला की लम्बाई 5 फीट 8 इंच और वजन 155 किलोग्राम होता है।

कांगो जायरे में मारे गए एक पर्वतीय प्रजाति के जंगली नर गोरिल्ला की ऊँचाई 6 फीट 2 इंच अभिलिखित की गई है। वर्तमान में सबसे बड़ा बंदी बनाकर रखा गया एक पूर्वी निम्न भूमि का कोलोसस नाम का नर गोरिल्ला फ्लोरिडा प्राणी उद्यान में है। जिसकी खड़े हुए की स्थिति में ऊँचाई 6 फीट 2 इंच तथा वजन 260 किलोग्राम है।

बाल कविता : गफ्फूर 'स्नेही'

दीप जले

सोने की बाती, चांदी सा उजाला,
दीपावली का पर्व है मतवाला।
बम फटे और चले पटाखे,
रोशनी से मूंद मूंद गई आंखें॥

मावस का धुला दाग काला,
दीपावली का पर्व मतवाला।
फसल आई घर शुभ यही लाभ,
हिसाब नये शुरू यही रंग आम॥

बधाई मिठाई का चला है दौर,
साफ स्वच्छता है हर ठौर।
नया कैलेण्डर ये बतलाता,
दीपावली का पर्व है मतवाला॥

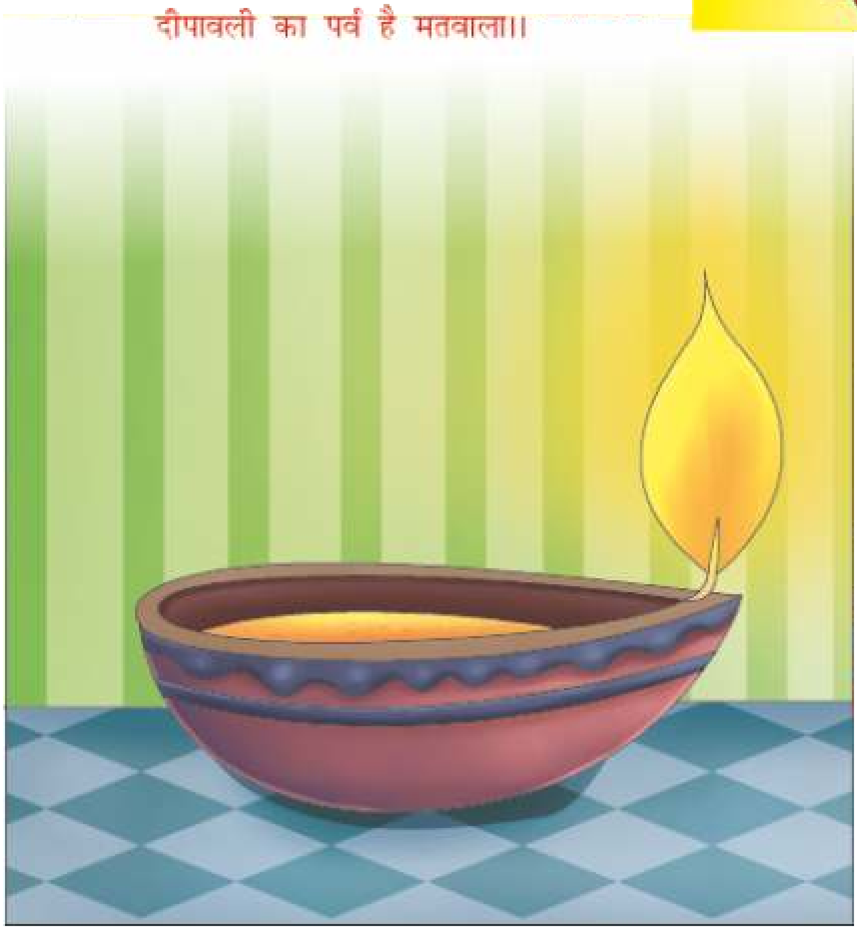

बाल कविता : दिनेश 'दर्पण'

दीपक

ज्योति नई दिखाता दीपक,
सबका मन पुलकाता दीपक।

अंधियारे को दूर भगाकर,
नवप्रकाश फैलाता दीपक।

घर आंगन का कोना कोना,
जगमग-जग करवाता दीपक।

यदि भटक जायें राह तो,
झटपट राह दिखाता दीपक।

एक लक्ष्य के लिए न्यौछावर,
सब कुछ कर जल जाता दीपक।

बाल कहानी : नेहा गुप्ता 'अंजू'

गलती का प्रायश्चित

आज नीता बहुत खुश थी क्योंकि आज उसका सबसे प्यारा त्योहार दीपावली जो था। वह इसका बेसब्री से इन्तजार कर रही थी। नीता दीवाली वाले दिन घर को सजाने की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती थी। सारा दिन वह घर में साफ-सफाई करके फूलों की झालर लगाती थी और अपने आंगन में जहाँ पूजा होती थी, वहाँ बड़ी-सी रंगोली बनाती थी। शाम होते ही वह अपने भइया के साथ पटाखे जलाने में मस्त हो जाती थी।

नीता के भाई पंकज को पटाखों का बहुत ही शौक था। वह नये-नये तरीके के पटाखे जरूर लाता था। नीता की बुआ का घर पास में ही था। सभी लोग पूजा करके एक ही घर में इकट्ठे हो जाते थे और खूब सारे पटाखे अनार, चरखी, फुलझड़ी आदि साथ मिलकर जलाते थे।

नीता को आज रंगोली बनाने में देर हो गयी क्योंकि आज वह पहली बार रंगोली में गणेश-लक्ष्मी का चित्र बना रही थी। उसे इस बात का कोई दुख नहीं था कि इस साल उसे देर हो गयी बल्कि वह बार-बार अपनी कला को बैठकर निहारने लगती थी। पंकज उसे सताए बिना कहाँ मानने वाला था। आराम से निहारते देखकर पंकज उसे चिढ़ाते हुए बोला- हाँ ठीक है! तुमने बना लिया लेकिन इसमें मेरा हाथ था। अगर मैं तेरी चोटी नहीं खींचता तो तुम जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ कर देती।

दोनों भाई-बहन की बात सुनकर माँ भी मुस्कुरा दी। पूजा का समय हो गया था। सभी तैयार होकर आंगन में आ गये। माँ और दादीजी ने पूजा के थाल सजा लिए थे। जिनमें दीपक, मोमबत्तियां तथा पूजा का सामान अलग-अलग रखा था। पूजा करने के

बाद पंकज और नीता ने मोमबत्तियां और दीपक दरवाजे पर लगाये। तब तक बुआ, फूफाजी और उनके साथ राहुल, मनी भी आ गये। अब शुरू हो गया पटाखों का सिलसिला। एक व्यक्ति पटाखा जलाता था और अन्य सभी उसका मजा लेते थे। मनी के पापा मना कर रहे थे कि बम-पटाखों की जगह अनार फिरकी, चरखी, महताब, फुलझड़ी आदि ही जलाओ। बम और खतरनाक पटाखों से दूर रहो। लेकिन सारे बच्चे अपनी मस्ती में थे। बारी-बारी में पटाखों को खत्म किया जा रहा था। अनार बम खत्म हो चुके थे। अब बारी रॉकेट की थी। सभी बच्चे पीछे हट गये। पंकज ने एक बोतल में रॉकेट को लगाया और एक कागज के सहारे से उसमें आग लगा दी। पर यह क्या? कागज तो पूरा जल गया लेकिन रॉकेट तो चला ही नहीं फूफाजी ने पास जाने को मना कर दिया लेकिन पंकज ने एक ईंट से बोतल पर निशाना मारा तो बोतल गिर पड़ी।

जब वह नहीं जला तो सभी और पटाखों को चलाने में लग गये। थोड़ी ही देर बाद रॉकेट ने आग पकड़ ली और जमीन से घिसटता हुआ आगे बढ़ गया। वहाँ पर नीता पटाखा रखने के लिए झुक रही थी। तभी वह रॉकेट नीता की पीठ को छूता हुआ आगे बढ़कर वहीं फट गया। नीता की रेशमी फ्रॉक ने रॉकेट की चिंगारियों से आग पकड़ ली थी। यह दृश्य देख सभी नीता की ओर दौड़ पड़े। पास में खड़े फूफाजी ने नीता को पकड़कर जमीन पर लिटा दिया। भगवान का शुक्र था कि बगीचे की गीली जमीन और मिट्टी से नीता के फ्रॉक में लगी आग बुझ गयी। लेकिन इतने पर भी नीता की पीठ में आग से जलन होने लगी थी। पापा उसे लेकर तुरन्त डॉक्टर के पास ले गये।

पंकज मन ही मन अफसोस कर रहा था कि काश! उसने फूफाजी की बात मानकर रॉकेट नहीं

छुड़ाया होता तो उसकी बहन की यह हालत नहीं होती। पंकज बगीचे में बैठा ये सोच ही रहा था कि अचानक उसके कन्धे पर किसी ने हाथ रखा। पंकज ने पीछे मुड़कर देखा तो बुआ खड़ी थी। बुआ ने पंकज के आंसू पोंछते हुए कहा- बेटा, ये तो भगवान का लाख-लाख शुक्र था कि एक बड़ा हादसा होने से बच गया। नहीं तो वह रॉकेट नीता को बहुत नुकसान पहुँचा सकता था।

पंकज ने रोते हुए कहा- बुआ, मेरी वजह से नीता को चोट लगी। मुझे अपने पर बहुत गुस्सा आ रहा है। मुझे जो चाहे सो सजा दो बुआ।- उसका रोना देखकर बुआ ने कहा- सजा तो तुम्हें अपने आप ही मिल गयी है। अपनी गलती हा प्रायश्चित करना ही सबसे बड़ी सजा है। तुमने अपनी गलती का प्रायश्चित स्वयं ही कर लिया है। अब आगे से ध्यान रखना और पटाखे सम्भलकर जलाना। यह हमेशा याद रखो कि आग किसी को भी नहीं छोड़ती।- बुआ की बात सुनकर पंकज ने मन ही मन निश्चय किया कि आगे से वह ऐसी गलती दोबारा नहीं करेगा और यदि कोई ऐसी गलती कर रहा होगा तो उसे भी रोकेगा।

रोचक प्रेरक-प्रसंग : जयेन्द्र

भविष्यवाणी का कमाल

लन्दन के उस छात्र का नाम विलिंगटन था। वह बहुत ही गरीब था। स्कूल में हर वक्त फटे वस्त्र तथा फटे जूते पहनकर जाया करता था। उसके सहपाठी अक्सर उसका मजाक उड़ाते रहते, लेकिन वह तनिक भी बुरा नहीं मानता था।

दरअसल, वह मन ही मन सोचा करता– मेरे गरीब होने के कारण ही ये सहपाठी मेरा मजाक उड़ाते हैं। कई बार जब वह यह बात गंभीरता से गले उतारता तो एकान्त में खूब रोया करता। फिर अपने आप से ही समझौता कर, गरीबी की बात भूल जाता और पढ़ाई करने में मस्त हो जाता।

चूंकि विलिंगटन के घर बिजली नहीं थी, इस कारण वह रात्रि में स्ट्रीट लाइट के नीचे अपना 'होमवर्क' किया करता था। एक बार बालक विलिंगटन ने किसी कारणवश अपना होमवर्क नहीं किया तो अध्यापक ने उसके दोनों हाथों पर डंडे मारे। वह जब रोने लगा तो अध्यापक ने उसे चुप करने के उद्देश्य से पूछा– क्यों विलिंगटन! यह टाइमपीस क्या कहती है?

अबोध विलिंगटन ने उत्तर दिया– 'क्लॉक सेज दी टन, टन, टन एंड विलिंगटन वुड बी लॉर्ड ऑफ लंदन' (घड़ी कहती है टन, टन, टन और लंदन का लॉर्ड बनेगा विलिंगटन)।

यह सुनते ही कक्षा के अन्य छात्र जोर-जोर से हँसने लगे और उसे 'लंदन लॉर्ड' के नाम से चिढ़ाने लगे। लेकिन बालक विलिंगटन की यह भविष्यवाणी सौ फीसदी सत्य साबित हुई और वह एक दिन सचमुच लंदन का लॉर्ड बना।

आगे चलकर लॉर्ड विलिंगटन ने राष्ट्रहित में कई नेक कार्य किये, जिनके कारण वे आज भी संसार में अमर हैं।

दो बाल कविताएं :
डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

लो फिर से आ गई दीवाली

मन में उठी उमंग निराली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

कहीं बताशे, कहीं मिठाई,
लड्डू, बर्फी, रसमलाई।
चुनमुन देख-देख ललचाए,
उसके मुँह में पानी आए।।

दादी जी करतीं रखवाली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

टिम-टिम करते तारे जैसे,
घर-घर जलते दीपक ऐसे।
डरकर भाग गया अँधियारा,
आया एक नया उजियारा।।

चारों ओर छाई खुशहाली,
लो फिर से आ गई दीवाली।

ऐसे मनाएं दीपावली

भेदभाव के अन्धकार को,
द्वेष-क्लेश, मन के विकार को,
आओ सब मिल दूर भगाएं।
ऐसे दीपावली मनाएं।

अभिमानों को पस्त-ध्वस्त कर,
गरिमा की फुलझड़ी जलाकर,
प्रेम प्यार को हम अपनाएं।
ऐसे दीपावली मनाएं।

आलसपन का त्याग करें हम,
मेहनत से हर काम करें हम,
कपट झूठ को सबक सिखाएं।
ऐसे दीपावली मनाएं।

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

तितली मछली

तितली मछली दो अलग-अलग परिवारों की ऐसी मछलियों को कहा जाता है, जिनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। इनमें से एक परिवार की मछलियां ताजे पानी में तथा दूसरे परिवार की मछलियां सागर में रहती हैं। कुछ लोग ताजे पानी में पायी जाने वाली मछलियों को तितली मछली कहते हैं तथा सागर में पायी जाने वाली मछलियों को फरिश्ता मछली कहते हैं। कुछ लोग इसके पूरी तरह विपरीत हैं। वे ताजे पानी की मछलियों को फरिश्ता मछली और सागर में पायी जाने वाली मछलियों को तितली मछली कहते हैं। अतः तितली मछली के सम्बन्ध में कुछ भी कहने से पहले तितली मछली की स्थिति स्पष्ट करना आवश्यक है।

विश्व में ऐसी बहुत-सी मछलियां पायी जाती हैं, जिन्हें फरिश्ता मछली के नाम से जाना जाता है। इन सभी को तीन भागों में विभाजित किया जाता है। पहले भाग में सागर की मुनि मछली आती है। यह शार्क की निकट सम्बन्धी है। यह फरिश्ता मछली तो है, किन्तु इसे तितली मछली कभी नहीं कहा जाता।

दूसरे भाग में पश्चिमी अफ्रीका की नदियों में पायी जाने वाली फरिश्ता मछली आती है। इसका वैज्ञानिक नाम पैन्टोडोन बछोलजी है। इसे तितली मछली भी कहते हैं। ताजे पानी की तितली मछली अपना अधिकांश समय जलीय पौधों के मध्य व्यतीत करती है। तितली मछली के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि यह पानी की सतह या हवा में चमगादड़ों अथवा पक्षियों के समान उड़ती है। इस समय यह अपनी पूरी शक्ति लगाकर छाती के बड़े-बड़े मीनपंखों को ऊपर-नीचे करके उड़ने का प्रयास करती है। तितली मछली के इस विलक्षण गुण ने जीव वैज्ञानिकों को अपनी ओर आकर्षित किया तथा सन् 1950 के बाद इस पर अनेक प्रयोग किये गये। इन प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकला कि इसके सम्बन्ध में प्रचलित सभी धाराणाएं भ्रामक हैं। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार तितली मछली उड़ नहीं सकती, किन्तु यह दो मीटर तक ऊँची उछल सकती है।

तितली मछली एक छोटी मछली है। इसकी लम्बाई 8 सेंटीमीटर से 12 सेंटीमीटर तक होती है। तितली मछली का शरीर नाव के आकार का होता है। यह ऊपर से चपटी और नीचे से गोलाई लिये हुए होती है। इसका रंग धूसर हरे से लेकर कत्थई रूपहले तक होता है तथा इसकी पीठ एवं बगलों पर कत्थई अथवा गहरे हरे रंग के धब्बे और रेखाएं होती हैं। तितली मछली का मुँह बड़ा होता है और ऊपर की ओर उठा रहता है। इसके नथुने लम्बे और ट्यूब के आकार के होते हैं। तितली मछली के मीनपंख सर्वाधिक विचित्र होते हैं। इसके मीनपंख सामान्य मछलियों से पूरी तरह अलग होते हैं तथा देखने में ऐसे मालूम पड़ते हैं, मानो लम्बे-लम्बे कांटे हों। तितली मछली की छाती के मीनपंख बड़े एवं पंख जैसे होते हैं तथा इनका रंग कत्थई-सफेद होता है। इसके नितम्बों के दोनों मीनपंखों का रंग भी कत्थई-सफेद होता है एवं प्रत्येक मीनपंख में चार-चार फिनरेज होती हैं। जब यह पानी में आराम करती है तो इसके नितम्बों के मीनपंख फैल जाते हैं एवं पूंछ लम्बी-सी हो जाती है। तितली मछली के

बिना जोड़ वाले मीनपंख बड़े और पारदर्शी होते हैं तथा इनमें लम्बी-लम्बी फिनरेज होती हैं। इसके मीनपंखों की संरचना इस प्रकार की होती है कि यह इनका उपयोग पानी से हवा में आने के लिए कर सकती है। तितली मछली को यदि हाथ में लिया जाये तो यह अपने मीनपंख पक्षियों के समान ऊपर-नीचे करती है, किन्तु इसके मीनपंख स्वतंत्र रूप से हवा में गति नहीं कर पाते।

तितली मछली का प्रमुख भोजन नदियों, तालाबों और झीलों में पाये जाने वाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े हैं। इसके साथ ही यह पानी की सतह पर गिरने वाले कीड़े-मकोड़े भी खाती है। तितली मछली पानी की सतह के निकट उड़ने वाली मक्खियों तथा इसी तरह के छोटे-छोटे जीवों को बड़ी सरलता से पकड़ लेती है और खा जाती है। कुछ जीव वैज्ञानिकों का मत है कि यह छोटी-छोटी मछलियों का भी शिकार करती है।

तितली मछली के निषेचित अण्डे बहुत हल्के होते हैं एवं मादा के शरीर से निकलते ही पानी की सतह पर आ जाते हैं तथा तैरते रहते हैं। इनसे बच्चे निकलने का समय पानी के तापक्रम पर निर्भर करता है। सामान्यतया इन अण्डों के लिए 30 डिग्री सेल्सियस तापक्रम आदर्श होता है। आदर्श तापक्रम पर तीन दिन में अण्डों के आवरण फट जाते हैं एवं इनसे तितली मछली के छोटे-छोटे बच्चे निकल आते हैं। तितली मछली के अण्डों के समान ही इसके बच्चे भी पानी की सतह पर तैरते रहते हैं तथा ये जन्म लेते ही भोजन करना आरम्भ कर देते हैं। इनका प्रमुख भोजन स्प्रिंग टेल, ग्रीनफलाई जैसे अत्यन्त छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े हैं। तितली मछली के बच्चे कुछ समय बाद बड़े हो जाते हैं और वयस्क तितली मछली के समान जीवन आरम्भ कर देते हैं।

तितली मछली को एक्वेरियम में रखकर पालतू बनाया जा सकता है किन्तु इसके लिए उथले पानी वाला बड़ा एक्वेरियम होना चाहिये। तितली मछली ऊँची कूद लगाने वाली मछली है। अतः एक्वेरियम का ऊपर से ढंका होना भी आवश्यक है। एक्वेरियम में तितली मछली बड़े शौक से मक्खियां तथा तिलचट्टे आदि खाती है। अतः इसे पालना कोई कठिन कार्य नहीं है। तितली मछली को एक्वेरियम में रखने से इसके भोजन सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। तितली मछली मृतजीव अथवा मृतजीवों को कभी नहीं खाती। यह जीवित कीड़े-मकोड़ों का शिकार करती है और उन्हें ही खाती है।

तीसरे भाग में सागरों और महासागरों में पायी जाने वाली शानदार रंगबिरंगी फरिश्ता मछलियां आती हैं। ये सभी कीटोडोन्टीडाइ परिवार की हैं।

इन्हें समुद्री तितली मछलियां कहा जाता है। भारत में लक्षद्वीप के सागर तटों पर कीटोडोन ऑरिगा नामक एक समुद्री तितली मछली पायी जाती है। यही लक्षद्वीप का राज्यपशु है।

सागरों और महासागरों में पायी जाने वाली तितली मछली की लगभग 150 जातियां हैं। ये सभी दूर से देखने पर एक जैसी मालूम पड़ती हैं। इनकी समानता का प्रमुख आधार इनका आकार और रंगबिरंगे पंख हैं। समुद्री तितली मछली सामान्यतया उथले पानी में रहती है और कभी-कभी मुहानों में चली जाती है। यह प्रायः समुद्री चट्टानों व मूंगे की चट्टानों के आसपास जोड़े में अथवा छोटे-छोटे झुण्डों में रहना पसन्द करती है।

समुद्री तितली मछली बड़ी सुन्दर तथा रंग बिरंगी होती है। सामान्यतया युवा और प्रौढ़ समुद्री तितली मछलियों के रंगों में इतना अन्तर होता है कि ये अलग-अलग जातियों की मालूम पड़ती हैं। समुद्री तितली मछली की आयु का इसके व्यवहार पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रायः छोटी समुद्री तितली मछली अकेले रहना पसन्द करती है और अकेले ही भ्रमण करती है। युवा समुद्री तितली मछली भी अकेले ही भ्रमण करती है किन्तु यह एक सुरक्षित स्थान पर अन्य मछलियों से निश्चित रूप से मिलती है। यह स्थान प्रायः समुद्री पौधों के मध्य या किसी चट्टान के नीचे होता है। यदि इसे सागर की तलहटी में कोई टिन का डिब्बा आदि पड़ा मिल जाये तो यह उसे भी अपने मिलने का स्थान बना सकती है।

समुद्री तितली मछली की शारीरिक संरचना बड़ी आकर्षक होती है। इसकी सभी जातियों में आकार और रंग-रूप की विविधता देखने को मिलती है, किन्तु सभी के पंख चमकीले और रंगबिरंगे होते हैं। समुद्री तितली मछली की सभी जातियों में रॉक ब्यूटी सर्वाधिक सुन्दर और आकर्षक होती है। इसका आगे का भाग काला एवं शरीर के पीछे का भाग पीला होता है। इसके मीनपंख चमकीले पीले रंग के होते हैं और इन पर लाल रंग के निशान होते हैं। यह बड़ी जिज्ञासु प्रवृत्ति की होती है। अतः प्रायः पानी के भीतर तैरती हुई अन्य जीवों के निकट पहुँच जाती है।

समुद्री तितली मछली की सुन्दर जातियों में शाही तितली मछली तथा नीली तितली मछली के नाम भी प्रमुख है। इनके शरीर के रंग अत्यन्त आकर्षक और चमकीले होते हैं। इन दोनों मछलियों का रंग गहरा नीला व बैंगनी होता है एवं शरीर पर काले-सफेद अर्धचन्द्राकार निशान होते हैं। ये निशान इनकी आँखों के पास तक चले आते हैं।

समुद्री तितली मछली की 150 से अधिक जातियों की खोज की जा चुकी है। इनमें नवीनतम है– बौनी तितली मछली। इसकी खोज सन् 1908 में हुई। सन् 1908 में बरमूडा के निकट के सागर में 162 मीटर की गहराई पर कुछ मछलियां पकड़ी गयी थीं, उनमें से एक बौनी तितली मछली भी थी।

फ्रांस के सागर तटों पर पायी जाने वाली फ्रांसीसी तितली मछली के शरीर की बनावट और रंग सभी बड़े विलक्षण होते हैं। इसकी त्वचा कठोर होती है व शरीर काले रंग का होता है एवं ऊपर की ओर पीले रंग का एक पट्टा होता है, जो दोनों मीनपंखों के नीचे तक चला जाता है। इसी तरह पीले रंग का एक पट्टा दोनों आँखों के मध्य से आरम्भ होता है और नीचे आकर थूथुन के पास चूड़ी के समान गोल आकार ग्रहण कर लेता है। इसकी आँखें काफी उभरी हुई होती हैं एवं सामने से देखने पर पूरा शरीर एक डरावने मुखौटे के समान मालूम पड़ता है।

हँसती दुनिया पढ़ते जाओ।
जीवन में आगे बढ़ते जाओ।।

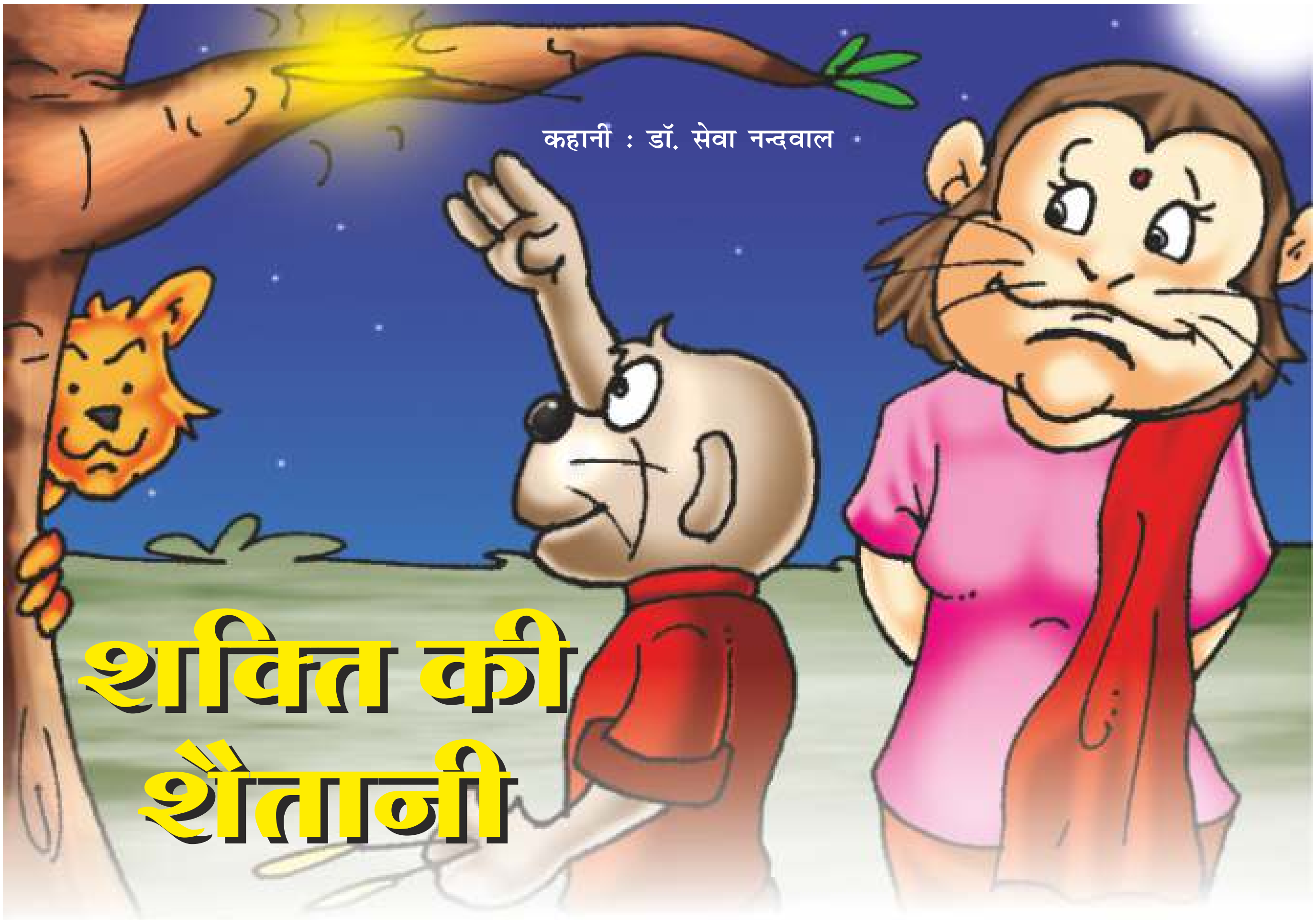

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

शक्ति की शैतानी

चंपकवन में जश्न का जबरदस्त माहौल था, अवसर था– दीपावली महापर्व।

चारों तरफ प्रकाश फैला था तथा आतिशबाजी का शोर गूंज रहा था। आग के लगते ही पटाखे फुर्र से आसमान में उड़ जाते और थोड़ी देर में नीचे गिरते हुए रंग–बिरंगी लड़ियां बिखेरते।

पशु सोसायटी के बाहर बच्चे इकट्ठे होकर पटाखे चला रहे थे। शक्ति वानर फुलझड़ी जलाकर पास में खड़े नीम के पेड़ पर उछाल रहा था। फुलझड़ी वहाँ जाकर अटक जाती और जलते हुए फूल नीचे गिरने लगते। शक्ति को बड़ा मजा आता और वह ताली पीटकर अपनी प्रसन्नता जाहिर करता। उसकी मम्मी ने एक–दो बार चेतावनी भी दी– बेटे, ऐसा खेल मत खेल, पेड़ में आग लग जाएगी तो बड़ी मुश्किल होगी।

''पेड़ में कभी आग लगती है मम्मी। पेड़ तो हरे–भरे होते हैं उनमें आग कैसे लगेगी।'' शक्ति वानर मुस्कुराते हुए बोला।

''फिर भी बेटे सावधानी रखने में हमारी भलाई और सुरक्षा है।'' मम्मी ने समझाया।

''कुछ नहीं होगा मम्मी तुम चिन्ता मत करो।'' शक्ति ने कहा और पूर्ववत् फुलझड़ियां जलाकर पेड़ के ऊपर उछालता रहा।

एक बार शक्ति वानर के द्वारा फेंकी गई फुलझड़ी पेड़ की सूखी डाल पर जा अटकी। फिर क्या था– देखते ही देखते आग लग गई और फैलने लगी। हरि हाथी और ओमी ऊँट पानी उछालकर आग बुझाने की चेष्टा करने लगे मगर आग बुझी नहीं। फैलती हुई आग से सभी पशुगण चिन्तित हो

उठे। आग पशु सोसायटी की बिल्डिंग को छूने का प्रयास करने लगी थी।

तभी जोर से चीं चीं करते हुए चीनू चिड़िया आई और विलाप करने लगी– ''अरे मेरे बच्चों को बचाओ, वे मर जाएंगे।''

''कहाँ हैं तुम्हारे बच्चे?'' कालू कौए ने पूछा।

''घोसले में, जहाँ आग लगी है उसी के पास मेरा घोसला है। बचाओ नहीं तो मेरे चुन्नू मुन्नू बेमौत मारे जाएंगे।'' चीनू चिड़िया रोते हुए बोली। लेकिन उसकी करुण पुकार किसी ने नहीं सुनी। कौन अपनी जान जोखिम में डालकर बच्चों को बचाने की कोशिश करता? शक्ति वानर अपनी गलती पर सकपकाता हुआ घोसले तक पहुँचने की युक्ति सोच रहा था। तब तक गेली गिलहरी ने अपने मोबाइल से फायर ब्रिगेड को फोन कर दिया और थोड़ी ही देर में सायरन बजाते हुए फायर ब्रिगेड की गाड़ी और पुलिस वहाँ पहुँच गई।

जोरदार प्रयासों से आग पर काबू पा लिया गया और घोसले में अटके चीनू चिड़िया के दोनों बच्चे सुरक्षित उतार लिये गये। ज्यादा नुकसान नहीं हुआ फिर भी पुलिस अधिकारी जांच करने लगे। एक ने पूछ लिया– ''आग किसने लगाई?''

''आग कोई क्यों लगाएगा?''– बब्बी बिल्ली ने बचाव की भूमिका बनाई।

''मौसी मुझे पता लगा है कि कोई सिरफिरा फुलझड़ी जलाकर पेड़ पर उछाल रहा था।''– पुलिस अधिकारी भालू बोला।

शक्ति वानर की जान सूखने लगी। अब गया काम से। अगर किसी ने मुँह खोल दिया तो दीवाली की रात पुलिस थाने में बीतेगी। सबने कितना मना किया था पर उसकी बुद्धि तो जैसे घास चरने चली गई थी। 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।' वाली कहावत चरितार्थ हो रही था।

''तुम बताओ चीनू चिड़िया तुम्हें मालूम होगा... तुम्हें किस पर शक है?''– पुलिस अधिकारी ने पूछा।

चीनू चिड़िया ने उड़ती नज़र शक्ति वानर के चेहरे पर डाली जहाँ इस वक्त हवाईयां उड़ रही थीं और पश्चात्ताप के भाव तैर रहे थे। चीनू चिड़िया बोली– नहीं, सर किसी ने जानबूझकर आग नहीं लगाई कोई फुलझड़ी नहीं उछाल रहा था। शायद कोई चिंगारी पड़ने से आग सुलग पड़ी... मुझे किसी पर शक नहीं है।

फायर ब्रिगेड और पुलिसवाले खानापूर्ति करके चले गये। शक्ति वानर और उसकी मम्मी ने राहत की सांस ली। शक्ति वानर ने सबके सामने हाथ जोड़कर माफी मांगी और कहा कि वह फिर कभी ऐसी हरकत नहीं करेगा।

बालगीत : रंजना राजेश चौधरी

दीपों का त्योहार

दीपों का त्योहार दीवाली आई है।
खुशियों का संसार दीवाली आई है।

घर आंगन सब नया-नया सा लगता है।
नया-नया परिधान सभी को फबता है।।
नये नये उपहार दीवाली आई है।
खुशियों का संसार दीवाली आई है।।

दीप सजे जैसे मोती की लड़ियां हैं।
नन्हें-नन्हें हाथों में फुलझड़ियां हैं।।
जलते हुए अनार दीवाली लाई है।
खुशियों का संसार दीवाली लाई है।।

बालगीत : महेन्द्र कुमार वर्मा

जंगल में दीवाली

दीवाली पर चूहे जी ने,
नया सूट सिलवाया।
बिल्ली रानी ने परिधान,
मुंबई से मंगवाया।।

शेरजी ने भी मंगवाई,
लखनऊ की शेरवानी।
बन्दर भैया लेकर आया,
नीला सूट पठानी।।

भालू जी का सफेद कोट,
सबके मन को भाया।
हाथी दादा का कुर्ता पाजामा,
पटियाला से आया।।

जंगल सजा, पेड़ मुस्काए,
पवन चली मतवाली।
धूमधाम से सबने मनाई,
जंगल मे दीवाली।।

विशेष जानकारी : दीपांशु जैन

विचित्र छिपकलियां

छिपकली प्राय: हर घर में देखने को मिल जाती है। आइये, आज हम आपको कुछ अजीबो-गरीब छिपकलियों से मिलवाएं-

देव छिपकली : इंडोनेशिया के कमोड द्वीप में पाई जाने वाली ड्रागोन नामक छिपकली अपने भारी-भरकम शरीर के कारण सचमुच 'देव' कहलाने की हकदार है। यह तेरह-चौदह फुट लम्बी होती है और इसका वजन ढाई सौ पौंड के लगभग होता है। यह कितनी खतरनाक होती है, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह जंगली सूअर, घोड़े और हिरण आदि को समूचा चटकर जाती है। दुनिया में इससे बड़ी छिपकली नहीं पाई जाती।

चाकू छिपकली : अमरीका में पाई जाने वाली इस छिपकली की दुम लम्बी और चाकू की तरह होती है। यही नहीं, मोर की तरह उसके सिर पर एक सुन्दर कलगी भी होती है। और तो और यह अद्भुत छिपकली पानी में तैर भी सकती है। तैरने में उसकी लम्बी चाकू जैसी दुम बहुत सहायक होती है।

रंग बदल छिपकली : अमरीका की यह छिपकली भी जब चाहे अपनी पसंद का रंग बदल लेती है और इस प्रकार आसानी से अपने शत्रु को धोखा दे देती है।

सींगदार छिपकली : यह बिल्कुल जरूरी नहीं है कि सींग केवल चौपायों के ही हों। मटियाले रंग की यह छिपकली भी अपने माथे पर चौपायों तरह सींग रखती है। मजे की बात यह है कि चौपायों की तरह ही यह धरती पर रहना पसंद करती है।

शाकाहारी छिपकली : कीड़े-मकोड़े न खाकर घास-फूंस से ही शाकाहारी छिपकली जीवन बिताती है। इसका नाम 'इंगवान' है और यह धरती पर नहीं, पानी में रहती है।

जमाखोर छिपकली : मैक्सिको में पाई जाने वाली 'गिले मोंस्टर' नामक छिपकली अपनी लम्बी दुम में खाना जमा करती रहती है। यह बहुत खतरनाक होती है। अपने शिकार पर आक्रमण करके यह उससे चिपक जाती है और उसके शरीर में जहर प्रविष्ट करके उसको मार डालती है।

दाढ़ी वाली छिपकली : इन महोदया को दाढ़ी रखने का शौक है मगर यह दाढ़ी उसी समय प्रगट होती है जब इनको गुस्सा आता है। उस समय इनके गले की नीचे की खाल लटक जाती है, जो देखने में ऐसी लगती है, जैसे दाढ़ी हो।

झालर वाली छिपकली : आठ इंच लम्बी इस छिपकली की पूंछ लगभग दो फुट लम्बी, पतली,

चाबुक की तरह होती है। इसकी सबसे अनोखी बात है इसकी गर्दन पर लटकने वाली खाल की ढीली झालर। जब इसे कोई खतरा होता है तो यह छिपकली अपनी टांगों को समेट कर खड़ी हो जाती है और अपने सिर को ऊपर उठाकर अपना मुँह खोल लेती है और तब यह अपनी गर्दन पर लटकी झालर को भी खोलकर एक सख्त कालर की तरह फैला लेती है।

पेड़ पर चढ़ने वाली छिपकली : इस छिपकली का वैज्ञानिक नाम है 'केमेलियोन'। यह वृक्षों पर चढ़ने वाली छिपकली है, जो मुख्य रूप से श्रीलंका, अफ्रीका तथा दक्षिणी यूरोप में पाई जाती है। यह एक कीटभक्षी जन्तु है। कीड़े-मकोड़े, टिड्डे, झींगुर और मकड़ियां इसका प्रिय भोजन है। इसके पैर की अंगुलियां छोटी होते हुए भी सुविकसित होती हैं। आंखें बड़ी तथा ढक्कन से ढकी होती हैं। सिर पर मुर्गे के समान कलगी होती है।

सबसे मजेदार बात तो यह है कि इसकी जीभ बहुत लम्बी होती है। जीभ की लम्बाई का पता सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि पूरी निकली हुई

जीभ सम्पूर्ण शरीर से भी लम्बी होती है। प्राणी-जगत में शायद केमेलियन की जीभ ही सबसे अधिक लम्बी होती है। इस छिपकली की जीभ का अग्र भाग का सिरा फूला हुआ तथा स्रावी पदार्थ युक्त होता है। यह प्राणी जीभ की सहायता से ही शिकार करता है। इस छिपकली में रंग बदलने की अद्‌भुत क्षमता होती है। थोड़ा-सा छेड़ने मात्र से यह अपना रंग बदल लेती है। केमेलियोन अंडे देती है, किन्तु इसकी कुछ जातियां बच्चे भी पैदा करती हैं।

इतिहास के आइने में दीपावली

- ☆ त्रेता युग में दैत्यराज रावण को मारकर अयोध्या वापस आने की खुशी में भगवान राम आदि के स्वागत में कार्तिक अमावस्या को दीप जलाकर दीपावली मनाते हैं।
- ☆ भगवान कृष्ण द्वारा नरकासुर के वध के बाद उसके अत्याचारों से मुक्त होने पर भगवान कृष्ण के सम्मान में दीपावली मनाते हैं।
- ☆ स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी रामतीर्थ ने इसी तिथि को शरीर त्यागा था।
- ☆ इसी दिन जैन सम्प्रदाय के प्रवर्तक भगवान महावीर का निर्वाण हुआ और इस प्रकार ज्ञान की ज्योति बुझ जाने पर जैन समाज में पुन: दीप जलाकर दीपावली मनाने की प्रथा प्रारम्भ हुई।
- ☆ आदि शंकराचार्य इसी दिन पैदा हुए थे।
- ☆ इसी दिन भगवान बुद्ध के स्वागत में 2500 वर्ष पूर्व असंख्य दीपों का प्रकाश कर दीपावली मनाई गई।

विशेष जानकारी : विभा वर्मा

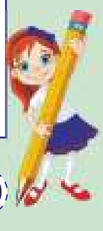

कहानी : विभा वर्मा

रूप का घमण्ड

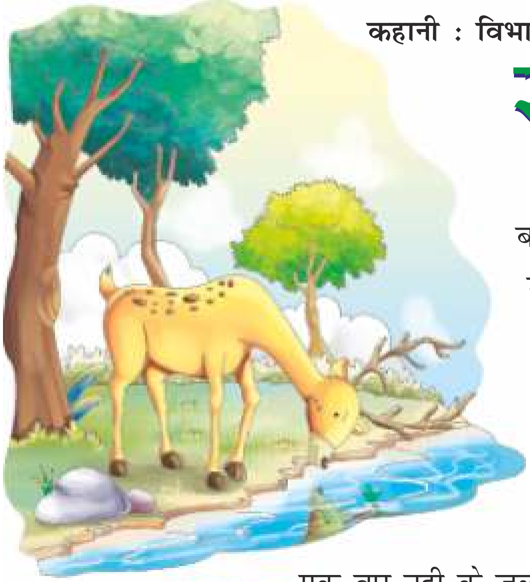

चम्पकवन में एक बारहसिंघा सोनू रहता था। उसे अपने रूप पर बहुत घमण्ड था। घमण्डी होने के साथ-साथ वह शैतान भी था। उसकी शैतानियों से चम्पकवन के सभी जानवर बहुत परेशान रहते थे। वह स्वयं को भी सभी जानवरों में सबसे सुन्दर एवं महान मानता था। जब भी वह नदी के किनारे से गुजरता, एक ऊँचे टीले पर खड़ा होकर नदी के जल में अपने सुन्दर सींगों को घंटो निहारते रहता।

सोनू सोचता– मेरे सींग कितने सुन्दर हैं। मैं ही यहाँ का सबसे सुन्दरतम प्राणी हूँ।

एक बार नदी के जल में सोनू रोज की तरह अपने सुन्दर रूप को निहार रहा था, तभी उसकी निगाह अपनी टांगों पर पड़ गई। वह अपने भद्दे पैरों को देखकर उदास हो गया। वह सोचने लगा– काश! मेरे पैर भी मेरे सींगों की भांति सुन्दर होते।

एक दिन सोनू अपने पैरों के भद्देपन से छुटकारा पाने का उपाय सोच रहा था। उपाय सोचने में वह इतना खो गया कि उसे आस-पास की सुधि भी न रही।

तभी उसे अपने पीछे किसी जानवर के होने का आभास हुआ। जब उसने दोनों कान खड़े कर गर्दन को पीछे घुमाकर देखा तो उसके होश उड़ गये। उसके पीछे वनराज शेरसिंह आक्रमण की मुद्रा में खड़ा था।

अपनी मौत को सामने देखकर सोनू तेजी से भागने लगा। सोनू को भागते देखकर शेरसिंह ने भी उसका पीछा किया। तब तक सोनू चौकड़ियां भरते शेरसिंह से काफी आगे निकल गया। जब वह अपने पैरों से कुलांचें भरता हुआ तेजी से भाग रहा था तभी उसके सींग झाड़ीदार पेड़ की टहनियों में फंस गये। उसने अपने सींगों को टहनियों से निकालने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन असफल रहा। तब तक शेरसिंह पीछा करता हुआ उसके बहुत नजदीक आ चुका था।

शेरसिंह को अपने नजदीक देखकर सोनू ने अपने सींगों को छुड़ाने के लिए अपने पैरों से टहनियों को दबाकर जोरदार झटका दिया। ऐसा करते ही सींग टहनियों से अलग हो गये।

सींग छूटते ही वह दौड़कर एक टीले की दूसरी तरफ मौजूद घनी घास में छिप गया और अपनी जान बचाई।

सोनू ने मन ही मन सोचा कि मेरा यह विचार कितना गलत था कि मेरे पैर भद्दे हैं। सुन्दर नहीं है। अगर आज मेरे पैर साथ न देते तो मैं शेरसिंह के पेट में चला ही गया होता। अब उसे अपने पैरों का भद्दापन बुरा नहीं लगता था। उसे इस सत्य का ज्ञान हो गया था कि ''महानता की कसौटी कर्म है न कि सुन्दरता।''

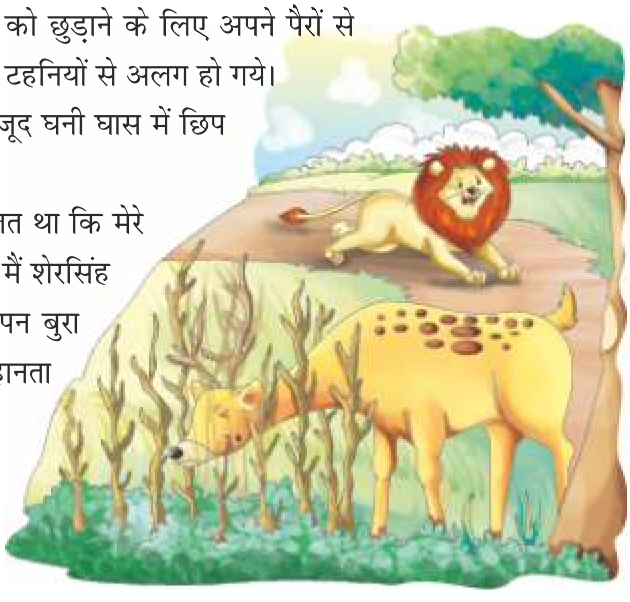

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

नाम कमाओ

खिले फूल से तुम मुस्कुराओ,
हरियाली संग गाना गाओ।
नदी सरोवर तालाब भरे हैं,
खुद के रास्ते नेक बनाओ।।

तितली संग भी दौड़ लगाओ,
भौंरों के संग गाना गाओ।
बातें करो तुम खुशबू जैसी,
सबके संग तुम प्रेम लुटाओ।।

वैर भाव का पाठ पढ़ो नहीं,
बुरे विचार भी गढ़ो नहीं।
चेहरे पर मुस्कान समेटो,
पढ़ो लिखो और खेल रचाओ।।

अच्छा सोचो अच्छा करोगे,
सबके भीतर जोश भरोगे।
माता-पिता और गुरु की सेवा,
पढ़-लिखकर तुम नाम कमाओ।।

बच्चों की दुनिया

आसमान में खिलते तारे,
सब बच्चों को लगते प्यारे।
पानी में ये झिलमिल करते,
नन्हें मुन्ने राज दुलारे।।

वैसे ये बच्चों की दुनिया,
सविता रीता और मुनिया।
हँसते खिलते तारों जैसे,
माता-पिता की आंख के तारे।।

पल में ठुमके और चहके,
डांटो तो ये देखो बहके।
प्रेम प्यार से मन जाते हैं,
जैसा सांचा ढलते सारे।।

शिक्षा इनको अच्छी देना,
देश प्रेम की नींव जमाना।
भूल चूक तो होती रहती,
भारत देश के बच्चे प्यारे।।

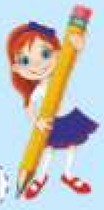

विशेष लेख : राजकुमार जैन

गुणों से भरपूर शहद

मधु या शहद संसार में सर्वत्र परिचित वस्तु है। संसार की समस्त मानव जाति ने मधु को अपने जीवन का अंग माना है। चीनी, मिस्री, बेबीलोनी, हिब्रू, ग्रीक, हिन्दू, ईसाई व बौद्ध आदि मधु को पवित्रतम पदार्थ के रूप में मानते हैं।

मधुमक्खियां फूलों में से एक प्रकार का मीठा रस एकत्रित करती हैं। इसी रस को मकरंद कहते हैं। मधुमक्खियां जीभ से मकरंद उठाती हैं और अपने मधु-आमाशय में इकट्ठा करती हैं। इसके बाद अपने छत्ते में बैठी अन्य मधुमक्खियों को सौंप देती हैं और तुरन्त ही मकरंद लाने चली जाती हैं। छत्ते की मधुमक्खियां मकरंद को छोटी-छोटी कोठरियों में रखने में व्यस्त रहती हैं। उनकी विशिष्ट ग्रंथियों से निकलने वाला द्रव्य मकरंद में मिलता रहता है। वे छत्ते में घुसकर एक-एक बूंद रस लेकर अपने मुँह में रखती हैं और उसे अपने मधु-आमाशय में ले जाती हैं, फिर बाहर निकालती हैं और इसी प्रक्रिया को कई बार दोहराती हैं। इस तरह उनका कार्य जारी रहता है और वे अति परिश्रम से पुष्प रस का संचय करती हैं।

अमेरिका के वैज्ञानिक डॉ. ए. वी. स्टुअर्टवेंट ने शहद के गुणों और रोग-निवारक क्षमताओं पर लम्बे समय तक अनुसंधान किया। उनका निष्कर्ष है कि शहद अद्‌भुत टॉनिक है और अपने में जबरदस्त रोग-निवारक गुण समाहित किए हुए है। डॉ. स्टुअर्टवेंट ने बताया कि पुराने श्वास-रोग और पेचिश में पाए जाने वाले रोगाणु शहद में रखने से 48 घंटों में मर गये। जब उन्होंने शहद में टाइफाइड के रोगाणु रखे तो 120 घंटे में वह नष्ट हो गये। इसकी वजह शहद की वह क्षमता है जिस वजह से शहद आसपास के परिवेश से नमी शोषित कर लेता है।

मधु में 17 प्रतिशत से 23 प्रतिशत तक जल, अंगूरों की शर्करा और फलों की शर्करा 65 प्रतिशत तक होती है। शेष प्रतिशत में धातुएं-पोटेशियम, गंधक, कैलशियम, सोडियम, फॉस्फोरस, मैगनीशियम, सिलीका, लोहा, तांबा, मैगनीज तथा अम्ल पदार्थ जैसे ग्लूकोनिक एसिड, लैकटिक एसिड और मौलिक एसिड इत्यादि होते हैं। इसके अतिरिक्त और तकरीबन एक प्रतिशत एनजाइम्स और विटामिन भी होते हैं।

बालों व त्वचा के सौन्दर्य व पुष्टता के लिए तो मधु अत्यधिक उपयोगी है ही, चर्म रोगों के लिए भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। चर्म-रोग और फोड़े-फुंसी चाहे कितने ही फैले और गम्भीर अवस्था में हो, मधु का लेप करने से शीघ्र ही सूखने लगेंगे। मवाद भी आसानी से निकल जाएगा।

थकान के वक्त यदि शहद का उपयोग किया जाए तो तत्काल राहत मिलेगी व ताजगी तथा स्फूर्ति महसूस होगी। शहद से प्राप्त शक्ति काफी समय तक शरीर में मौजूद रहती है। शहद में अद्‌भुत गुण यह है कि यह कभी खराब नहीं होता। हरदम उपयोगी बना रहता है। शहद में सड़ांध पैदा नहीं होती व यह शरीर में होने वाली सड़ांध को रोकता है। 1923 ई. में मिस्र में फराओ तूतन खामन के पिरामिड में रूसी वैज्ञानिकों को शहद से भरा हुआ

पात्र मिला। सचमुच यह हैरत में डाल देने वाली बात थी कि 3300 वर्ष पुराना होने के बावजूद यह खराब नहीं हुआ था। उसके स्वाद व गुण में कोई अन्तर नहीं आया था।

आइए, अब शहद के कुछ उपयोगों के बारे में जानकारी देते हैं–

★ यदि आपको काली खांसी की शिकायत है तो एक–दो बादाम छिलका उतारकर घिस लें और उनमें शहद मिलाकर चाटें। खांसी मिट जाएगी।

★ शहद की मक्खी के काटे हुए स्थान पर शुद्ध शहद लगाएं। इससे जलन कम होगी व सूजन भी नहीं आएगी।

★ पेट में दर्द होने पर एक बड़ी इलायची को पीसकर एक चम्मच शहद में मिलाकर पीने से दर्द मिट जाता है।

★ गर्म पानी में शहद मिलाकर दिन में तीन–चार बार सेवन करने से जुकाम ठीक हो जाता है।

★ हिचकी यदि लगातार आ रही है, तो शहद चाटिए।

★ शरीर के किसी हिस्से के जल जाने पर वहाँ शहद लगाने से आराम मिलेगा।

★ आपको कब्ज की शिकायत है तो सप्ताहभर तक एक गिलास पानी में नींबू का रस और शहद मिलाकर दिन में दो बार सेवन करें। कब्ज मिट जाएगा।

★ सामान्य नेत्र विकार तथा नेत्रों की वेदना, नेत्रों में शहद डालने से ठीक हो जाती है तथा नेत्र ज्योति बढ़ती है।

★ छाती पर जमा हुआ कफ एक तौला शहद दिन में तीन से चार बार लेने से गलकर बाहर आ जाता है।

★ चेहरे की खूबसूरती तथा त्वचा को कोमल बनाने के लिए रात्रि को शयन से पूर्व चेहरे पर हल्का शहद मसल लें। एक सप्ताह के प्रयोग से चेहरा चमक उठेगा।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

चलो, हम नदी के किनारे चलते हैं, खूब मज़े करेंगे।
लो, अब करो खूब मज़े। साफ़ सुथरे होकर बाहर निकलना।
बचाओ! बचाओ! मुझे तैरना नहीं आता।

रूको! रूको! मैं आ रही हूँ तुम्हें बचाने।
किट्टी, तुमने अच्छा नहीं किया, अगर चिंटू को कुछ हो जाता तो! चलो, अब हम सब घर चलते हैं।
मैं भाग-भाग कर सबसे पहले पहुँच जाती हूँ घर!

अरे! बचाओ! बचाओ! मैं कीचड़ में गिर गई।
हा, हा, हा, चलो अब किट्टी को नदी में फेंक देते हैं। इसके लिए साफ होना बहुत ज़रूरी है।
किट्टी को अब समझ आया 'जो बोवोगे वही काटोगे।'

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (उटुरुकला)

कभी न भूलो

★ जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारा सच्चा मित्र है। – चाणक्य

★ भगवान का आश्रय लेने वाले को दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती। – स्वामी रामसुख दास

★ बच्चों के लिए उस कर्ज को चुकाना मुश्किल है जो उनके माता-पिता ने उन्हें बड़ा करने के लिए किया है। – रामायण

★ कर्म वह दर्पण है जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब झलकता है। – विनोबा भावे

★ ईश्वर सर्वशक्तिमान है, उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते।

★ अच्छा सोचो, अच्छे कर्म करो, अच्छे इंसान बनो। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ मुसीबतों को हौंसले से झेलो, इनसे घबराना अपने काम को बिगाड़ना है। मुसीबत में ही आदमी का इम्तिहान होता है। – लाला लाजपतराय

★ मूर्ख को मूर्खता के अनुरूप उत्तर न दो, नहीं तो तुम भी उसी के अनुरूप हो जाओगे। – तुलसीदास

★ जिस प्रकार जल में पड़ा होने पर भी पत्थर नरम नहीं होता उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति की अवस्था होती है ज्ञान दिए जाने पर भी उसकी समझ में कुछ नहीं आता। – रहीमदास

★ सत्य केवल ईश्वर ही है। परलोक में सत्य से जिस प्रकार जीवन का उद्धार होता है। उस तरह यज्ञ, दान और नियमों से नहीं। एकमात्र सत्य ही अविनाशी ब्रह्म है। – महाभारत

★ महान आत्माओं को सर्वदा अल्प सोच वाली मानसिकता का प्रचण्ड विरोध सहना पड़ा है। – आगस्टीन्स

★ अभिप्राय में उदारता, कार्य सम्पादन में मानवता, सफलता में संयम इन्हीं तीन चीजो से महान व्यक्ति जाना जाता है। – विस्मार्क

★ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाय सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। – अल्बर्ट आइंस्टीन

★ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गंवाओ। उसके गुणों को अपनाने की प्रयास करो। – कार्ल मार्क्स

★ तुम हँसते हुए देखोगे कि सारा संसार तुम्हारे साथ हँसता है, लेकिन रोते समय तुम स्वयं को अकेला पाओगे। – विलकॉक्स

★ लोग क्या सोचेंगे इस बात की चिन्ता करने की बजाय क्यों न कुछ ऐसा करने में समय लगाएं जिसे प्राप्त करने पर लोग आपकी प्रशंसा करें। – डेल कार्नेगी

बाल कहानी : विपिन कुमार

किये की सजा

एक था गोलू खरगोश। उसे अपनी सुन्दरता पर बहुत घमण्ड था। वह न सिर्फ अपने साथियों बल्कि भाई-बहनों के आगे भी शेखी बघारता रहता— मुझे काले-कलूटे एवं कुरूप संगी-साथी अच्छे नहीं लगते।

एक दिन निक्की बकरी का उसने ऐसा अपमान किया कि वह दिनभर रोती रही। हुआ वह कि गोलू के घर जाकर निक्की बकरी ने शतरंज खेलने का प्रस्ताव रख दिया। प्रस्ताव सुनते ही गोलू ने दम्भ भरते हुए कहा— कहाँ रेशम से कोमल बालों और दूध-सा श्वेत रंग वाला मैं और कहाँ कौए से भी काली मोटे रोम वाली एवं छछूंदर की तरह बदबू फैलाने वाली तुम। हमारा-तुम्हारा जोड़ा कैसा? कैसी दोस्ती? जाओ, भागो यहाँ से...।

बेचारी निक्की बकरी रोती हुई वापस घर आ गई।

इसी तरह एक दिन टॉमी कुत्ते का भी उसने देखते-देखते अपमान कर डाला। टॉमी कुत्ता एक जगह आराम कर रहा था। तभी गोलू वहाँ आ धमका। वह ट्रेन से उतरकर आ रहा था। गोलू के हाथ में एक बड़ी-सी अटैची थी। गोलू आते ही टॉमी कुत्ते को अटैची थमाने लगा और बोला— टॉमी यह अटैची मेरे घर पहुँचा दो... मुफ्त नहीं पैसे दूँगा।

टॉमी कुत्ता गोलू के इस अप्रत्याशित व्यवहार पर दंग रह गया। वह गोलू के पिता का हमउम्र था। गोलू ने इसका भी लिहाज नहीं किया। टॉमी कोई उत्तर देता इससे पहले ही गोलू उसे भला-बुरा कहते हुए अपनी अटैची लिए आगे बढ़ गया।

गोलू के दुर्व्यवहार से जंगल के सभी जानवर तंग आ चुके थे। वे गोलू को सबक सिखाना चाहते थे पर विवश थे। गोलू अपने पिता की भी बात नहीं मानता था। वह कहता— मैं अनपढ़ पिता की बात ही मानूँगा तब शहर के कॉलिज में किसलिए पढ़ता हूँ।

सभी जानवर मन ही मन कामना करते कि गोलू को सीख मिले और वह दिन भी आ गया।

दिवाली आने वाली थी। गोलू बाजार से पटाखे लाता और दिनभर चलाता रहता। जंगल का कोई जानवर जब रास्ते से आ जा रहा होता तो वह अचानक एक पटाखा उनकी ओर चला देता। बेचारा जानवर गिरता-पड़ता भागता।

लालू भालू का तो इसी मजाक में बायां पांव ही टूट गया। उसने गोलू के पिता को चेताया। गोलू ने पिता की सलाह का मजाक उड़ाते हुए कहा– मैं तो पटाखे चलाऊँगा। बिना पटाखे की दिवाली कैसी?

दिवाली वाले दिन शाम से ही वह पटाखे चला रहा था। घर वाले परेशान थे। माँ जब भोजन के लिए बुलाती तो वह कहता– बस एक और...। इसी क्रम में जब वह एक आकाशतारा जला रहा था, आकाशतारा गोलू के पास ही फट गया और गोलू का चेहरा बुरी तरह झुलस गया।

रोने-कराहने की आवाज सुनकर जंगल के जानवर जमा हो गये। निक्की बकरी, टॉमी कुत्ता, लल्लू भालू आदि मिलकर गोलू को नगर के अस्पताल ले गये। डॉक्टरों ने जाँच के बाद बताया कि गोलू का पूरा चेहरा झुलस गया है किन्तु ईश्वर की दया से आँखें बच गई हैं।

डॉक्टर की बात सुनकर गोलू जोर-जोर से रोने लगा– ऐसा कुरूप चेहरा लेकर मैं कैसे जीवित रहूँगा। मेरा जीना बेकार है।

डॉक्टरों के साथ-साथ जंगली जानवरों ने भी गोलू को समझाया– गोलू, जिन्दगी चेहरे से अधिक मूल्यवान एवं सुन्दर है। तुम्हें इसके बारे में सोचना चाहिए।

लगभग दो माह की चिकित्सा के बाद गोलू खरगोश का घाव भर गया। अब उसका चेहरा काफी बदसूरत दिखता है। गोलू घूम-घूमकर जंगल के सभी जानवरों से अपने किए की क्षमा मांगते फिरता है।– माफ कर दीजिए, मुझे अपने किए की सजा मिल चुकी है।

रानी लक्ष्मीबाई जयन्ती (19 नवम्बर) पर विशेष

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

रानी लक्ष्मीबाई

आओ बच्चों तुम्हें सुनाएं,
गाथा एक पुरानी।
जिसने गोरों को ललकारा,
वह थी झांसी की रानी।।

सन् अट्‌ठारह सौ पैंतीस में,
उसने जन्म लिया था।
कर न सका जो कोई अब तक,
ऐसा काम किया था।।

मुँहबोली बहना नाना की,
साहस हिम्मत वाली।
वह तलवार चलाती ऐसे,
वार न जाता खाली।।

तेरह वर्षों में बन बैठी,
गंगाधार की रानी।
झांसी नगरी में आ पहुँची,
गढ़ने एक कहानी।।

बाद मृत्यु के गंगाधर की,
उसने राज्य सम्हाला।
जन-जन के जीवन में उसने,
फैलाया उजियाला।।

लेकिन गोरे डलहौजी को,
रास नहीं वह आई।
हड़प नीति से उसने झांसी,
अपने राज मिलाई।।

रानी बेबस हुई मगर फिर,
दुर्गा सी हुंकारी।
सबक सिखाने अंग्रेजों को,
की उसने तैयारी।।

अंग्रेजों के मित्र सिंधिया,
को भी सबक सिखाया।
और दुष्ट ह्यूरोज तलक को,
उसने मार भगाया।।

लेकिन गोरे चालबाज थे,
धोखे से आ घेरा।
चक्रव्यूह में उसे फंसा कर,
जग में किया अंधेरा।।

ज्योतिपुंज बन झांसी रानी,
ब्रह्म लोक में आई।
जन्म लिया था जिस सत्ता से,
उसमें पुनः समाई।।

जानकारी (लेख) : किरण बाला

विश्व की प्रसिद्ध गुफाएं

गुफाओं का इतिहास हजारों साल पुराना है। पाषाण युग में मानव गुफओं में रहता था। आज भले ही मानव इनमें न रहता हो पर ये गुफाएं पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र अवश्य बन गई हैं।

गुफाओं को लेकर तरह-तरह की धारणाएं और अंधविश्वास भी प्रचलित रहे हैं। यूनान के लोगों की धारणा थी कि उनके देवता गुफाओं में ही रहते थे। इसी प्रकार रोम के लोगों का मानना था कि गुफाओं में जादू-टोना करने वाले लोग रहते हैं। फारस के लोगों का विश्वास था कि गुफाओं में देवताओं का वास होता है। यही कारण था कि वे गुफाओं की पूजा करते थे। विज्ञान इन सभी धारणाओं और अंधविश्वासों को नहीं मानता है।

गुफाओं के रूप अनेक हैं यानी ये कई तरीकों से बनती हैं। आमतौर पर पहाड़ों में गहरी खाली जगह गुफा कहलाती है। होता यह है समुद्र से आनी वाली लहरें जब चट्टानों से टकराती हैं तो चट्टानों के बीच का मुलायम पत्थर अपने साथ बहा ले जाती हैं। यदि यह क्रम हजारों साल तक चलता रहे तो पहाड़ के भीतर काफी स्थान खोखला हो जाता है। आकार में टेढ़ा-मेढ़ा वह स्थान गुफा कहलाता है।

ऐसी बात नहीं है कि गुफाएं केवल पहाड़ों पर ही निर्मित होती हैं। जमीन के भीतर भी गुफाएं मिलती हैं जो कि जमीन के नीचे बहने वाली पानी की धारा से बनती हैं। इस तरह की अनेक गुफाएं अमेरिका में हैं।

ज्वालामुखीय परिवर्तनों की वजह से भी गुफाओं का निर्माण होता है।

दुनिया में ऐसी अनेक छोटी बड़ी गुफाएं हैं जो किसी अजूबे से कम नहीं है जिन्हें देखकर पर्यटक आश्चर्यचकित रह जाते हैं। यदि भारत की बात करें तो महाराष्ट्र में अजन्ता और एलोरा की गुफाएं विश्व प्रसिद्ध हैं। इन गुफाओं में बड़े-बड़े खूबसूरत चित्र बने हुए हैं। इन गुफाओं का निर्माण 300 ई. में आरम्भ हुआ तथा 1300 ई. में पूर्ण हुआ। एलोरा में लगभग 36 गुफाएं हैं जो पहाड़ों पर दूर-दूर तक फैली हुई हैं।

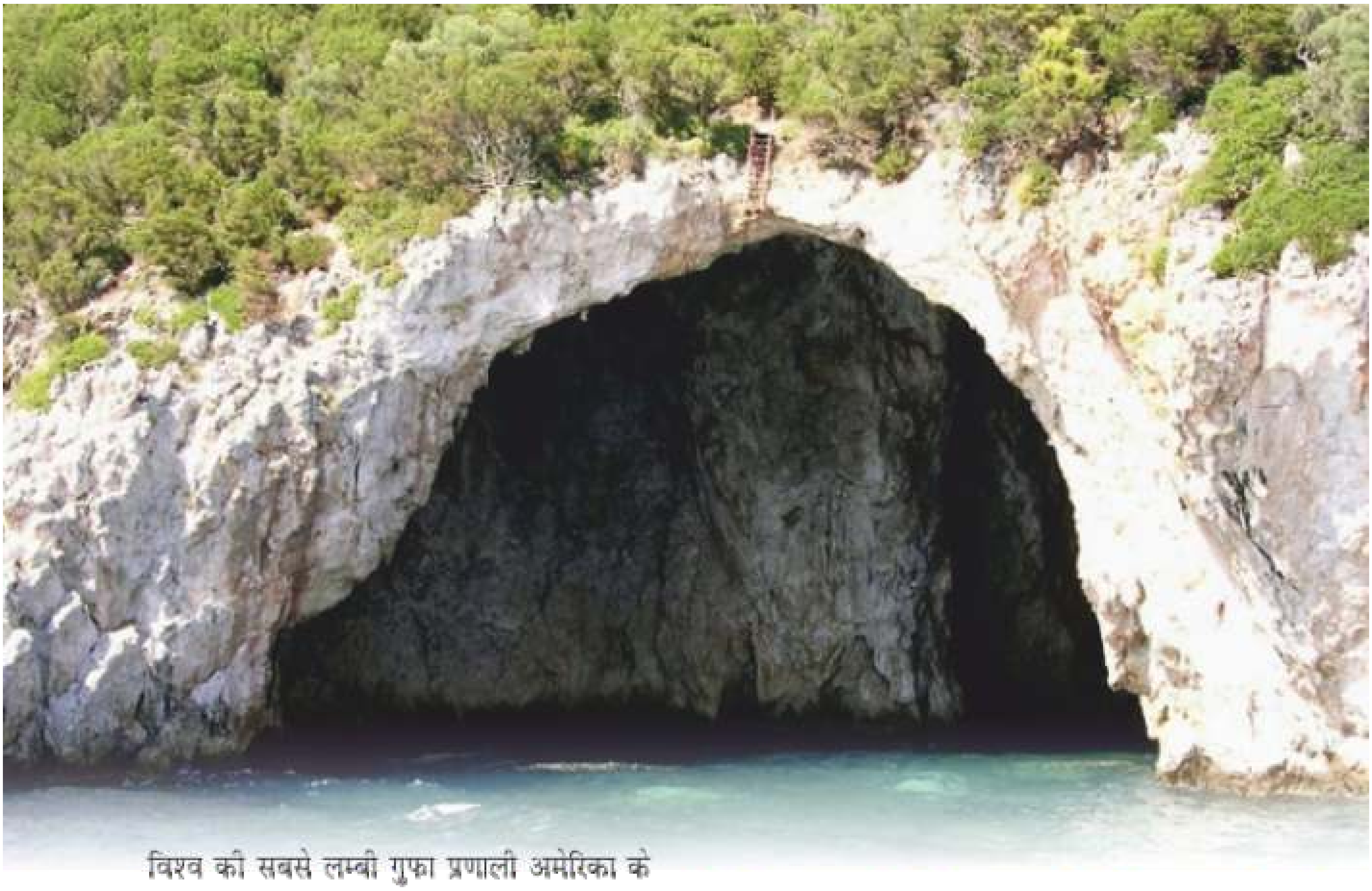

विश्व की सबसे लम्बी गुफा प्रणाली अमेरिका के केंटकी नामक स्थान में है जो मैमथ केव नेशनल पार्क के नीचे है। उसे सन् 1799 में खोजा गया था। 9 सितम्बर 1972 के एक खोजी दल ने फिलट रिज गुफा प्रणाली और मैमथ गुफा प्रणाली का मिला-जुला अध्ययन किया। उक्त संयुक्त गुफा प्रणाली के जो नक्शे बनाए गए थे उनके रास्तों की कुल लम्बाई 530 किलोमीटर से भी अधिक थी।

अमेरिका में 'फिलिट रिज केव सिस्टम' 116 किलोमीटर से भी अधिक लम्बी गुफा है।

विश्व की सबसे बड़ी गुफा सारावाक चैम्बर, लुबांग नासिब बागस है। सारावाक के गुनंगमुलु नेशनल पार्क में स्थित इस गुफा की लम्बाई 700 मीटर और औसत चौड़ाई 30 मीटर है। इसकी चौड़ाई कहीं पर भी 70 मीटर से कम नहीं है। इसकी खोज और सर्वेक्षण 1980 में ब्रिटिश मलेशियाई संयुक्त अभियान द्वारा हुई।

ब्रिटिश खोजकर्ताओं ने वियतनाम के जंगल में विश्व की एक बड़ी गुफा को खोजने का दावा किया है। यह गुफा 650 फुट ऊँची तथा 550 फुट चौड़ी है। वियतनाम में खोजी गई यह हांग सोन डूंग गुफा मलेशिया के सारावक स्थित डोर गुफा से बड़ी है। डोर गुफा 10 गज चौड़ी तथा 100 गज से अधिक ऊँची है तथा इसकी पहचान अब तक विश्व के सबसे बड़ी गुफा के रूप में की गई है। इसका सर्वे किया जा रहा है लेकिन शुरूआती अनुमान से पता चलता है कि गुफा का मुख्य मार्ग 200 मीटर ऊँचा है। गुफा का रास्ता भी 100 मीटर से अधिक चौड़ा है लेकिन इसका कुछ हिस्सा 150 मीटर भी अधिक चौड़ा है।

जहाँ तक सबसे गहरी गुफा का प्रश्न है, वह 'गुफरेडी ला पियरेसेट' है। यह फ्रांस और स्पेन की सीमा पर है। यह 4300 फीट गहरी है।

जहाँ तक पानी के भीतर गुफा का प्रश्न है, मेक्सिको के क्विन्ताना में नौहोच ना चिच कंदरा श्रेणी में सबसे लम्बी जलमध्य गुफा है।

पढ़ो और हँसो

पत्नी : अजी, क्या यह सच है कि रुपये-पैसे भी बोलते हैं?

पति : हाँ, कहते तो ऐसा ही हैं।

पत्नी : तो फिर आप दफ्तर जाने से पहले मुझे कुछ पैसे दे जाना, मैं घर में अकेली बैठी बोर होती रहती हूँ।

★ ★ ★

सब्जी बेचने वाले के घर पर जब बच्चा हुआ तो एक महिला ने कहा– बधाई हो, बच्चा कैसा है?

–एकदम ताजा है, बहन जी!– सब्जी बेचने वाले ने जवाब दिया।

★ ★ ★

दिनेश ने सोये हुए शेर को लात मारकर जगाया और प्रवीण से बोला– प्रवीण भाग।

प्रवीण बोला– मैं क्यों भागूं। लात मैंने थोड़े ही मारी है।

★ ★ ★

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।

बिल्ली मौसी : जरूर-जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।

बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ-म्याऊँ।

यह सुनकर चूहा बोला– रूको-रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

★ ★ ★

सोहन : डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को नाखून चबाने की बुरी आदत है क्या करूँ?

डॉक्टर : इसमें चिन्ता की क्या बात है। अपनी पत्नी को दाँतों के डॉक्टर के पास ले जाइए और सारे दाँत उखड़वा दीजिए।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

★ ★ ★

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिए जो दवा ले गये थे उससे कुछ फर्क पड़ा?

मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

★ ★ ★

एक साहब ने बड़ी देर तक ट्रेन के साथ भागने के साथ ट्रेन पकड़ ही ली। अन्दर बैठे हुए यात्रियों ने कहा– "बड़ी हिम्मत की आपने।"

व्यक्ति बोला– "भाई हिम्मत क्या की, जिसको चढ़ाने आया था वह तो स्टेशन पर ही रह गया।

★ ★ ★

हनी फिजिक्स का 'एग्जाम' देने गया, पेपर में सवाल पूछा गया– "कौन-सा लिक्विड गर्म करने पर सॉलिड बन जाता है।"

हनी का जवाब : "बेसन के पकौड़े।"

– रजित (ठाकुरपुरा, अम्बाला)

भिखारी: साहब, पांच रुपये दे दो।
साहब : तेरे पास छुट्टा है।
भिखारी: हाँ साहब है।
साहब : तो पहले वो खर्च कर ले। मेरे पास छुट्टा नहीं है।

★ ★ ★

काला : (विक्की से) मेरे पास ऐसी गाड़ी है जो बिना ड्राइवर के चलती है।
विक्की : कैसे?
काला : चाबी भरने से।

– स्नेहा (ठाकुरपुरा, अम्बाला)

★ ★ ★

मच्छर का बच्चा पहली बार उड़ा। जब वापिस आया तो उसके पिता ने पूछा– कैसा लगा उड़ के।

बच्चा बोला– बहुत अच्छा। जिधर भी गया लोग तालियां बजा रहे थे।

★ ★ ★

बेटा : (पिता से) पिताजी, मुझे तीन विषयों में एक समान अंक मिले हैं।
पिता : बेटा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। जरा हम भी तो सुनें, हमारे बेटे ने एक समान कितने अंक प्राप्त किये हैं?
बेटा : पिताजी, शून्य, शून्य, शून्य।

★ ★ ★

शिक्षिका : राहुल बताओ, हाथी की क्या पहचान होती है?
राहुल : मैडम जी, हाथी की दो पूंछ होती है एक आगे और एक पीछे।

★ ★ ★

ग्राहक : चूहे मारने की दवा मिलेगी क्या?
दुकानदार : जी हाँ यह लीजिये।
ग्राहक : चूहे मारने का पाप तुम्हें लगेगा या मुझे।
दुकानदार : किसी को भी नहीं।
ग्राहक : भला वह कैसे?
दुकानदार : चूहे मरेंगे तब ना।

– ज्योति, गीतू खनेजा (कलानौर)

★ ★ ★

एक नौजवान कमर में रस्सी बांधकर पहाड़ पर चढ़ने की ट्रेनिंग ले रहा था। तभी उसने गाइड से पूछा– सर, रस्सी एकदम मजबूत है ना! टूटेगी तो नहीं।

गाइड बोला– फिक्र मत करो, हमारे पास रस्सियों की कमी नहीं है।

★ ★ ★

पिता : (बेटे से) बेटा, तुम बाजार से गर्म मसाला क्यों नहीं लाये?
बेटा : दरअसल, पिताजी 'गर्म मसाला' को जैसे ही मैंने हाथ में लिया तो वह बिल्कुल ठंडा लगा इसीलिए मैं उसे नहीं लाया।

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

अजब-गजब

इन अजीबो-गरीब चित्रों में क्या भिन्नता है? ध्यान से देखिये और ढूंढिये।

– चाँद मोहम्मद घोसी

उत्तर : 1. मछली के धड़ पर गैंडे का सिर, 2. ऑक्टोपस के धड़ पर गिलहरी का सिर, 3. शेर के धड़ पर बारहसिंगा का सिर, 4. जिराफ के धड़ पर ऊँट का सिर और 5. कछुवे के धड़ के नीचे मानव के पैर लगे हैं।

आपके पत्र मिले

अगस्त माह की पत्रिका मिली। मुखपृष्ठ देखकर मन गद्‌गद् हुआ। अगस्त माह की पत्रिका पूर्णतः देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थी।

– सौरभ कुमार (माधेगंज, हरदोई)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरे घरवाले इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं।

अगस्त माह में 'कभी न भूलो' पढ़ा। ये बहुत ज्ञानवर्धक है। चित्रकथा 'किट्टी' भी अच्छी लगी।

इसके बारे में कहना चाहता हूँ कि–

हँसती दुनिया पढ़ते जाओ,
जीवन में आगे बढ़ते जाओ।

– वैभव सूर्यवंशी (डांगोली बांगर, मथुरा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ।

मैं और मेरा परिवार इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका में मुझे विशेष रूप से 'सबसे पहले' एवं कहानियां तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगते हैं। यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है।

यह पत्रिका विशेष रूप से छोटे बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिये लाभदायक है। मुझे इससे काफी अच्छी जानकारी एवं शिक्षा मिलती है।

– सनी कुमार (फिरोजाबाद)

सितम्बर अंक मिला। मुझे हँसती दुनिया के सारे अंक बहुत अच्छे लगते हैं। इसमें प्रेरणादायक व शिक्षाप्रद कहानियां होती हैं। इसे पढ़कर हमारा मन बहुत खुश हो जाता है। इससे हमें तरह-तरह की चीजों के बारे में भी जानकारी मिलती है। मैं हँसती दुनिया पढ़ने के लिए बहुत उत्सुक रहती हूँ।

– कनिका गर्ग (श्रीगंगानगर)

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं

सन्त निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेकों प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। हर प्रान्त की भाषा की पत्रिकाओं को बढ़ावा मिले और इनकी पाठक संख्या बढ़े इसकी जरूरत है। 'सन्त निरंकारी' हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, नेपाली, उड़िया व 'एक नजर' हिन्दी, पंजाबी, मराठी तथा 'हँसती दुनिया' हिन्दी, पंजाबी, मराठी, अंग्रेजी लगातार प्रगति कर रही हैं। पाठक और ब्रांच स्तर पर इनके प्रोत्साहन की आवश्यकता है। वर्तमान में सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया और एक नजर की चंदा राशि रुपये 150 एक वर्ष के लिए तथा रुपये 700 पाँच वर्ष के लिए है। 71वें निरंकारी संत समागम के अवसर पर जब आप समालखा पधारें तब अपनी पत्र-पत्रिकाओं की चंदा राशि जमा कराना भी सुनिश्चित कर लें तथा यदि इन्हें प्राप्त करने में आपको कोई परेशानी हो रही हो तो संत समागम ग्राउंड स्थित पत्रिका कार्यालय में कम्प्यूटर पर तुरन्त अपना सही पता, पिन कोड व मोबाइल नम्बर अवश्य चैक करवा लें / नोट करवा दें ताकि उसी अनुसार मण्डल का रिकॉर्ड अपडेट किया जा सके।

पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता एवं अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क का पता है–

पत्रिका-प्रकाशन विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक,
बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

Phone : +91-11-47660200, Extn. 862
Fax : +91-11-47660300, 27608215,
Help Line : 47660360, 859,
WhatsApp : 9266629841,
Email : patrika@nirankari.org

– सी.एल. गुलाटी, प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन
सं.नि.मं., दिल्ली-110009

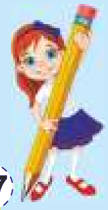

सितम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सेफाली गौतम** 13 वर्ष
ग्राम : सुरैला,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

2 **महक सोनी** 13 वर्ष
जी.एस.एस.एस., झाकड़ी,
जिला : शिमला (हि.प्र.)

3 **सुमति वर्मा** 11 वर्ष
210, टाइप-2, केन्द्रांचल कॉलोनी,
गुलमोहर विहार, नौबस्ता,
कानपुर (यू.पी.)

4 **रुद्रांश कण्डारी** 9 वर्ष
ग्राम : सोरगढ़, अगस्त्यमुनि,
जिला : रुद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड)

5 **समदिशा** 10 वर्ष
प्लॉट नं. 100,
सन्त निरंकारी कॉलोनी (दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

निहारिका, लवलीन (मोहाली), समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर), सिमरन (आदर्श नगर, फगवाड़ा), आशीष, अंकुश (चेतसिंह नगर, लुधियाना), खुशी (अशोक विहार, नकोदर), सौम्या सुमन (द्वारका, दिल्ली), शिवम (पलवल), उज्जवला (भरमोटी कलां), आशिता (सुल्तानपुर), अक्षिता (अमृतपुरी, दिल्ली), श्रेया (पी एंड टी कॉलोनी, बोकारो), अंजलि (डबरोग, सरकाघाट, मंडी), आराध्या (विमान नगर, कानपुर), आदित्य (झाकड़ी, शिमला), उदीशा (रामपुरी कॉलोनी, वाराणसी), नवदिशा (लोकनायकपुरम, दिल्ली), गुरुप्रीति (शिवराम पॉर्क, नांगलोई), सेजल (बंगोली, कांगड़ा), कुणाल (गौरा, उन्नाव), समीप (लखीमपुर-खीरी), तुषार (मथुरा), सबीर (पंजाला, कांगड़ा), वेदांत (नवघर रोड, भायंदर), ओम, भूमि, कुश, कृष्णा, प्रियंका, साहिल, दक्ष, आरती (गोधरा), अभिषेक, गौरव, शांति, संदीप, रोशनी, वंदित, संजना, रेशमा, टिंवकल, निखिल, रविश, हर्ष, प्रीति, राकेश (रायपुर)।

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **20 नवम्बर** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **जनवरी 2019 अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

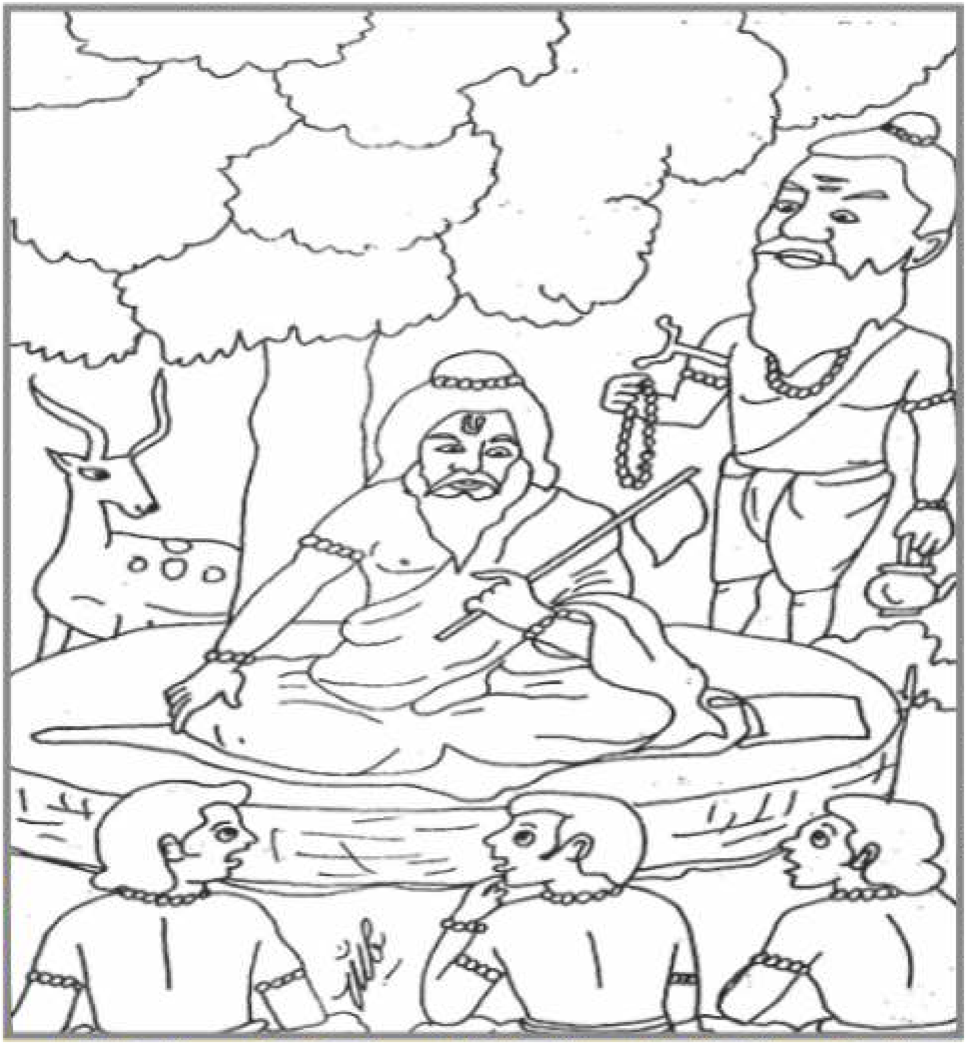

नाम .... आयु ....

पुत्र/पुत्री ....

पूरा पता ....

....

....पिन कोड ....

सद्‌गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की
पावन छत्रछाया में

71वां निरंकारी सन्त समागम

स्थानः समागम मैदान,
सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल
समालखा (हरियाणा)

–: कार्यक्रम :–

24 नवम्बर, 2018 (शनिवार)

सत्संग	:	अपराह्न 1.00 बजे से रात्रि 7.30 बजे
सद्‌गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे

25 नवम्बर, 2018 (रविवार)

सेवादल रैली	:	प्रातः 10.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे
सत्संग	:	अपराह्न 1.00 बजे से रात्रि 7.30 बजे
सद्‌गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे

26 नवम्बर, 2018 (सोमवार)

जनरल बॉडी मीटिंग	:	प्रातः 10.00 से दोपहर 12.00 बजे

नोट : यह मीटिंग समागम पण्डाल में ही होगी।

सत्संग	:	अपराह्न 1.00 बजे से रात्रि 8.00 बजे
कवि सम्मेलन	:	अपराह्न 3.00 बजे से 5.00 बजे
सद्‌गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 8.00 बजे

विशेष नोट : इस वर्ष समागम तीन दिन में ही सम्पन्न होगा और गुरु वन्दना का कार्यक्रम नहीं होगा।

(सी.एल. गुलाटी) सचिव (मुख्यालय)
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली - 9

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids
Spiritual Zone for kids
With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning
with exciting and fun features
highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots
excelling in the spiritual journey.
kids.nirankari.org
His Holiness Message
Glimpse of Blessing
Message in colors
Poetry Fantasy
Wacky and True
Fun Games
Hansti Duniya
Kids Creation
Kids Activities
Jokes
Avtar Vani
Story Time
Share
your talent
in form of
painting, poetry
& story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्‌गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)